Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र
terapanthtimes.org

आत्म शुद्धि की प्रक्रिया
म्यान रुप सावण सुध चोखें,
तप रुपी निरमल नीर।
धोबी ज्यूं छे अंतर आतमा,
ते धोवे छे निज गुण चीर।।

ज्ञान रुपी शुद्ध साबुन, तप रुपी निर्मल जल, अंतर आत्मारुपी धोबी। इससे निज गुण रुपी वस्त्र उजला हो जाता है।
–आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली ● वर्ष 26 ● अंक 30 ● 28 अप्रैल - 04 मई, 2025 प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 26-04-2025 ● पेज 12 ₹ 10 रुपये

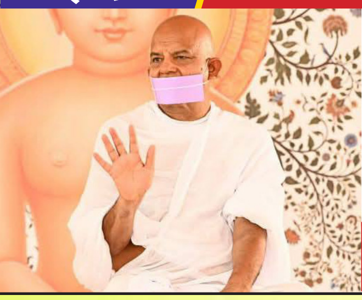

संवर और निर्जरा से प्राप्त होती है शांति : आचार्यश्री महाश्रमण
पेज 02

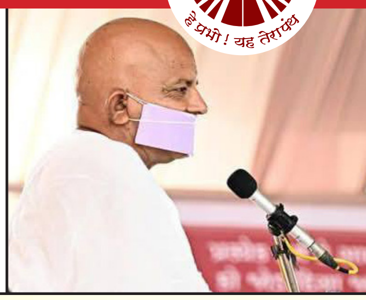

स्थूल से सूक्ष्म की यात्रा में श्रुतज्ञान होता है महत्वपूर्ण : आचार्यश्री महाश्रमण
पेज 11

Address Here

प्राण जाए पर धर्म न जाए : आचार्यश्री महाश्रमण

वाव।
22 अप्रैल, 2025

नौ दिवसीय वाव प्रवास का अंतिम दिन। भक्तों के भगवान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में भक्ति और समर्पण का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है। जो कोई विशिष्ट हो, उसके प्रति भक्ति संगत हो सकती है। शास्त्र में चौबीस तीर्थंकरों को नमस्कार किया गया है। नमन करना भक्ति का एक रूप है। नमन महान आत्माओं और अर्हतों को किया गया है। तीर्थंकर धर्म के प्रवर्तक होते हैं।

जैन शासन में णमोकार महामंत्र का बड़ा महत्व है। पांचों पदों में णमो की बात आई है। धर्म के संदर्भ में तीर्थंकर से बड़ा कोई प्रवचनकार नहीं होता। अध्यात्म जगत के वे नेता होते हैं। सिद्ध अक्षय, अरूज, अमूर्त आत्मा के रूप में होते हैं। आचार्य धर्म संघ के सारथी और संवाहक होते हैं। उपाध्याय आगम पठन-पाठन के अधिकृत अध्यापक होते हैं। साधु साधना में लीन रहने वाले, अनिकेत होते हैं। लोक के सब शुद्ध साधुओं को नमस्कार किया गया है। साधु तो केवली समुद्घात की अपेक्षा से पूरे लोक में मिल सकते हैं, पर अर्हत, सिद्ध, आचार्य और उपाध्याय सीमित क्षेत्र में ही होते हैं। भक्ति में सघनता का तारतम्य हो सकता है। आदर्श, सिद्धांत और नियमों के पालन के प्रति भी भक्ति हो सकती है। प्रभु और प्रभु के पंथ के प्रति भक्ति होनी चाहिए। भक्ति का उत्कृष्ट स्वरूप अर्हन्नक श्रावक में देखा जा सकता है — 'प्राण जाए तो जाए पर मैं धर्म नहीं छोड़ सकता।' धर्म कोई कपड़ा नहीं है जिसे पहना और उतार दिया जाए।
(शेष पेज 10 पर)

अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर
आदि तीर्थंकर भगवान
ऋषभदेव
को वंदन नमन

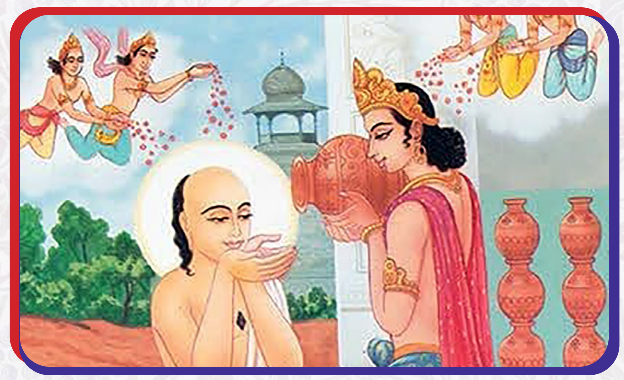

श्रेयांस के घट हाथ में,
ऋषभ के करपात्र में,
रस-दान श्रद्धा साथ में।
श्रद्धावनत: अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

जीवन जीने की कला है कर्तव्य-अकर्तव्य का विवेक : आचार्यश्री महाश्रमण

वाव।
20 अप्रैल, 2025

मैत्री के महानिर्झर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अध्यात्म रस बहाते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में कर्तव्य और अकर्तव्य का बोध होना अत्यंत हितकारी है। जिस व्यक्ति को अपने कर्तव्य और अकर्तव्य का ज्ञान नहीं होता, वह पतन की ओर अग्रसर हो सकता है। कर्तव्य-अकर्तव्य को न जानने वाले लोग पशु तुल्य हो जाते हैं। कर्तव्य-अकर्तव्य का विवेक अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। संसार में ऐसे पशु भी मिल सकते हैं जो श्रावक हैं, पंचम गुणस्थानवर्ती हैं और जिनमें पूर्वजन्म का ज्ञान भी हो सकता है। वे तिर्यंच जाति के जीव साधना करते हैं और श्रावक के व्रतों का पालन भी करते हैं। वहीं कई मनुष्य ऐसे भी होते हैं जो मिथ्यात्वी, प्रथम गुणस्थानवर्ती होते हैं। विवेक ही भेदरेखा है। जो व्यक्ति अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक रहता है, वह कर्तव्यपरायण बन सकता है।

सांसारिक कर्तव्य भी होते हैं। धार्मिक दृष्टि से देखें तो माता-पिता का कर्तव्य है कि वे अपनी संतानों को अच्छे संस्कार दें और उनके जीवन को धर्ममय बनाएं। छोटे-छोटे बच्चे ज्ञानशाला में जाते हैं, जहां उन्हें अच्छे संस्कार देने का प्रयास किया जाता है। माता-पिता का संतान के प्रति तथा संतान का माता-पिता के प्रति कर्तव्य होता है। सांसारिक सहयोग के साथ धार्मिक साधना में भी सहयोग करना चाहिए। इस प्रकार, संबंधों के आलोक में अनेक प्रकार के कर्तव्यों को देखा जा सकता है। अकर्तव्य से बचने का प्रयास करना चाहिए। साधु का कर्तव्य है कि वह उत्तम साधुता और साधना का जीवन जिए। यही उसका मूल कर्तव्य है।
(शेष पेज 10 पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
28 अप्रैल - 04 मई, 2025

द्वन्द की स्थिति में भी रहें सम : आचार्यश्री महाश्रमण

वाव।
15 अप्रैल, 2025

जन-जन का मंगल करने वाले आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्षवाणी की अमृत वर्षा कराते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने एक दृष्टान्त दिया है - आसक्ति और अनासक्ति को समझने के लिए। एक गीली मिट्टी का गोला जब दिवाल पर फेंका तो मिट्टी दिवाल पे चिपक गई और सूखी मिट्टी का गोला दिवाल पर फेंका तो मिट्टी दिवाल पर चिपकी नहीं, नीचे गिर गई। इन दोनों गोलों से यह समझाने का प्रयास किया गया है कि आसक्तिमान वह है जो पदार्थों-विषयों से चिपका रहता है और जो अनासक्त होता है, वह चिपकता नहीं है।

आसक्ति-अनासक्ति ये अध्यात्म और भौतिक दृष्टिकोण को बताने वाले तत्व हैं। कर्मों का बन्धन होता है, उस सन्दर्भ में ज्ञातव्य है कि आसक्ति के साथ कार्य किया जाता है तो कुछ सघन कर्मों का बन्ध हो सकता है। वहीं यदि कार्य अनासक्त भाव से होता है तो पाप कर्म की सघनता से बचाव हो सकता है। सघन कर्म बन्धन से आगे दुर्गति हो सकती है। अस्वाद वृत्ति वाला साधु पदार्थों में उलझता नहीं है। साधु और गृहस्थ की खाने की वृत्ति में भाव धारा का अन्तर रह जाता है। साधु खाने-पीने में कोई राग-द्वेष नहीं करते हैं। ऊपर की स्थिति में समानता हो सकती है पर भीतरी स्थिति में असमानता होती है।

गार्हस्थ्य में भी अनासक्त रहने का प्रयास करना चाहिये। धन का क्या भरोसा है, क्योंकि लक्ष्मी को चंचला कहा गया है। पदार्थ साधन है, साध्य नहीं है। किसी भी स्थिति में आसक्ति या तनाव न आये। कर्तव्य भावना से कार्य करें, मोह भावना से नहीं। मोह ज्यादा है तो दुःख आ सकता है। हर स्थिति में समभाव रहे। अनुकूलता हो या प्रतिकूलता, साधु प्रशंसा या निंदा न करें, समता रखे।

आवश्यकता की पूर्ति हो सकती है पर इच्छाएं तो असीमित हैं। इच्छाओं का परिसीमन हो। पदार्थ के उपभोग में संयम रखें। आदमी आसक्ति से बचें। गुरुदेव तुलसी ने कितनों को दीक्षित और शिक्षित किया था। कितना उनका सम्पर्क था। उनके जीवन का एक पक्ष अनुकूलता का है तो दूसरा प्रतिकूलता का भी है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी प्रेक्षाध्यान करवाते थे कि न प्रियता और न अप्रियता, दोनों से मुक्त रहकर देखना। आचार्यश्री भिक्षु ने कितना समभाव रखा था, विरोधों में भी सम रहे। बात-बात में प्रतिबोध दे देते थे। हम अनासक्ति के प्रति जागरूकता रखें, यह काम्य है।

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि दुनिया में ऐसे लोग तो बहुत मिलते हैं जो कमियां देखते हैं, परन्तु कमियों का सुधार करने वाले बहुत कम लोग होते हैं। कमियों का सुधार करने का सामर्थ्य गुरु में होता है। धर्मगुरु ज्ञान और चारित्र से उन्नत होते हैं और अपनी सर्वगुण सम्पन्नता से व्यक्तियों का निर्माण करते हैं। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें ऐसे धर्म गुरु मिले हैं।

पूज्यवर के स्वागत में वाव प्रवास व्यवस्था समिति की ओर से नरेश परीख, वाव भजन मंडली ने गीत से अपनी भावभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों एवं कन्या मंडला ने सुन्दर प्रस्तुति दी। प्रवीण भाई मेहता, परीख परिवार एवं उपासक अशोक भाई संघवी ने भी अपनी भावना रखी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

संवर और निर्जरा से प्राप्त होती है शांति : आचार्यश्री महाश्रमण

वाव।
19 अप्रैल, 2025

धर्मधुरंधर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने वर्धमान समवसरण में आगमवाणी की वर्षा करते हुए फरमाया कि व्यक्ति के मन में शांति से जीने की भावना भी रह सकती है। सुखपूर्वक जिएं, तनाव, चिंता और भय न हो। शांति में जीना अच्छा है, परंतु व्यक्ति शांति में जीते हुए कठिनाइयों से डरता रहे — यह उचित नहीं। शांतिमान व्यक्ति में साहस भी होना चाहिए। आवश्यकता हो तो क्रांति करने का साहस भी होना चाहिए।

अर्हत वंदना के पहले पद्य का अर्थ है — जो बुद्ध हुए हैं और जो बुद्ध होंगे, उनका आधार शांति है। जैसे प्राणियों का आधार पृथ्वी है, वैसे ही बुद्धों का आधार शांति है। तीर्थंकर केवलज्ञानी बने हैं, पर केवलज्ञान तब तक प्राप्त नहीं होता जब तक मोहनीय कर्म समाप्त न हो जाए। अशांति का मूल कारण मोहनीय कर्म है। तीर्थंकर वही बन सकता है जो क्षीण मोह बनता है। उपशांत मोह बनने से बुद्धत्व प्राप्त नहीं होता। ग्यारहवाँ गुणस्थान तो बंद गली जैसा है, उसमें जो प्रवेश करेगा, उसे वापस नीचे के गुणस्थान में ही आना होगा। मोह का नाश करेंगे, तभी बुद्ध बनेंगे।

सामान्य व्यक्ति भी शांति चाहता है। खुद शांति में रहें और दूसरों को भी शांति में रहने दें। शांति को प्राप्त करने के लिए हमें कुछ बाधाओं पर ध्यान देकर उन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिए। शांति में एक बाधा है — गुस्सा। अनुप्रेक्षा से गुस्से को प्रतनू बनाने का प्रयास करें। अधिक चिंता भी न करें। गृहस्थों को रोटी-पानी, कपड़े, मकान, गहने-आभूषण, शादी, संतान, इष्ट इंद्रिय विषयों की चाह रहती है। इनके रहते व्यक्ति कैसे शांति को प्राप्त करेगा?

चिंता नहीं, चिंतन करो। चिंता, भय, गुस्सा और लोभ से मुक्त रहने का प्रयास करें। चिंता तो चिता के समान होती है। चिता निर्जीव को जलाती है, चिंता सजीव को जलाती है। जो हितोपदेश को नहीं मानता, उस पर गुस्सा मत करो — अपना सुख मत खोओ। इस जीवन में शांति होना पुण्य का योग है। जो अनुकूलताएँ प्राप्त हैं, वे पूर्व पुण्य का फल हैं। आगे के लिए पुण्य संचय करें। पुण्य भी कर्म पुद्गल है। हम निर्जरा का प्रयास करते रहें — अन्य किसी विषय में न भटकें और न लटकें। संवर, निर्जरा और मोक्ष पर ध्यान दें।

संसार के सुख तो नश्वर हैं। मोक्ष का सुख शाश्वत है। हमें तो मोक्ष पाना है। इसके लिए संवर-निर्जरा की साधना करें। पुण्य कर्म छूटेंगे तभी मुक्ति मिलेगी। हमें पुण्य की कामना नहीं करनी चाहिए। हमें यह मनुष्य जन्म मिला है — इसका अच्छा लाभ उठाएँ। जप-तप और धर्म में रहें। आचार्यश्री भिक्षु ने क्रांति की थी। गुरुदेव तुलसी ने भी कितनी लंबी यात्रा की थी। श्रम करो, सफल बनो। सफलता का पौधा परिश्रम के सिंचन से ही बढ़ता है। शांति और क्रांति दोनों का महत्व है। पुरुषार्थ करते हुए जीवन में आगे बढ़ने का प्रयास करें। पुरुषार्थ की लौ जलती रहे। हम संवर और निर्जरा की साधना करते हुए मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ते रहें।

पूज्यप्रवर के मंगल प्रवचन के उपरांत साध्वीवर्याजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भगवान महावीर ने हमें चार सुख शैय्याएँ बताकर शांति का पाठ पढ़ाया है। निर्ग्रंथ प्रवचन में अटल श्रद्धा हो। श्रद्धा संसार-सागर से पार लगा सकती है। हमारी श्रद्धा खंडित न हो।

देव, गुरु और धर्म के प्रति हमारी अखंड श्रद्धा हो, जिससे हम जन्म-मरण से मुक्ति पा सकें। श्रद्धा के साथ अखंड धैर्य भी हो। हमारे जीवन में समता के भाव आएँ।

पूज्यवर की अभिवंदना में साध्वी हेमयशाजी और साध्वी आराधनाश्रीजी ने अपनी जन्मभूमि पर भावों की अभिव्यक्ति दी। वाव पथक मूर्तिपूजक जैनसंघ अहमदाबाद के प्रमुख रमेशभाई वाडीलाल मेहता, यश्वी केशभाई मेहता, अंकेश भाई डोशी ने अपने विचार रखे।

मगनलाल न्यालचंद मेहता, खेतसी भाई केवलदास मेहता, स्वरूपचंद भाई वीरचंद भाई मेहता, चिमनलाल डायलाल भाई मेहता परिवार ने गीत की प्रस्तुति दी। वाव ज्ञानशाला एवं कन्या मंडल अहमदाबाद ने स्वागत में प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

'इंटर ब्रांच मीट-संपर्क : अपनों के साथ' एवं 'रि-कनेक्ट – फेज 1' का आयोजन

मुंबई।

प्रेक्षा मेडिटेशन हॉल, कांदिवली तेरापंथ भवन के द्वितीय तल पर तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम मुंबई जोन द्वारा आयोजित इंटर ब्रांच मीट 'संपर्कः अपनों के साथ' और 'रि-कनेक्ट – फेज 1' का भव्य आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम का आयोजन टीपीएफ मुंबई वेस्टर्न ब्रांच ने किया, जिसमें 100 से अधिक सदस्यों ने भाग लिया।

कार्यक्रम को टीपीएफ की मुंबई वेस्टर्न, सेंट्रल, सिटी, नवी मुंबई, ठाणे, पालघर शाखाओं और श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन का सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत उत्साहपूर्ण वातावरण में हुई, और इसका संचालन राहुल डांगी ने किया। इस अवसर पर टीपीएफ के नेशनल जनरल सेक्रेटरी मनीष कोठारी और नेशनल आर्बिट्रेटर राज सिंघवी विशेष रूप से उपस्थित रहे। मनीष कोठारी ने अपने वक्तव्य में टीपीएफ की राष्ट्रीय योजनाओं, विशेष रूप से AMSSY और मिशन 1313 की जानकारी दी और सदस्यों से सक्रिय सहभागिता का आह्वान किया। उनकी प्रेरणा से कई सदस्यों ने मिशन 1313 के तहत विद्यार्थियों को सहयोग देने हेतु अपने नाम प्रस्तुत किए।

इसके बाद विभिन्न ब्रांचों के अध्यक्षों ने अपनी-अपनी शाखाओं की गतिविधियों, उपलब्धियों और आगामी योजनाओं पर प्रकाश डाला। इस संवाद ने ब्रांचों के बीच सहयोग और सामूहिक सहभागिता को प्रोत्साहित किया। ब्रांच अध्यक्षों में प्रशांत परमार (मुंबई वेस्टर्न), हेमंत जैन (मुंबई सेंट्रल), नीरज मोटावत (मुंबई सिटी), दिलखुश मेहता (नवी मुंबई), रवि जैन (ठाणे) और अंकित डांगी (पालघर) शामिल थे।

कार्यक्रम में सीनियर सदस्य, फ्यूचरा कन्वीनर मनीष कटारिया, फेमिना को-कन्वीनर स्नेहा मेहता और NEC सदस्य ऋषि धींग तथा डॉ. कपिल सिसोदिया की भी गरिमामयी उपस्थिति रही। एक इंटरएक्टिव Q&A सत्र में सदस्यों ने जोनल और नेशनल नेतृत्व से सवाल पूछे और सुझाव साझा किए, जिससे पारदर्शी और समावेशी संवाद स्थापित हुआ।

कार्यक्रम के अंत में सभी सदस्यों को री-कनेक्ट पिन और TPF पासपोर्ट भेंट किए गए, ताकि वे भविष्य में आयोजित होने वाली गतिविधियों में और अधिक सक्रियता से भाग ले सकें।

कार्यक्रम का समापन टीपीएफ मुंबई वेस्टर्न के मंत्री कमल धारेवा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

नेत्रदान जागरूकता हेतु मैराथन दौड़ का आयोजन

सरदारशहर।

प्राणनाथ हॉस्पिटल, गांधी विद्या मंदिर और तेरापंथ युवक परिषद, सरदारशहर के संयुक्त तत्वावधान में समाज में नेत्रदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए प्राणनाथ मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया। इस आयोजन में हर आयु वर्ग के पुरुष और महिला प्रतिभागियों ने बड़ी संख्या में हिस्सा लिया। सभी प्रतिभागियों ने सफेद टीशर्ट और कैप पहनकर नेत्रदान के संदेश के साथ दौड़ लगाई।

मैराथन दौड़ को पद्मभूषण देवेंद्र झाझड़िया, पूर्व प्रतिपक्ष नेता राजेंद्र राठौड़, चूरू विधायक हरलाल सारण, सभापति राजकरण चौधरी, पूर्व विधायक अशोक पिंचा, प्रधान प्रतिनिधि मधुसूदन राजपुरोहित, थाना अधिकारी मदन विश्नोई, आइएएसई मानित विश्वविद्यालय के कुलाधिपति कनकमल दूगड़, जीवीएम अध्यक्ष हिमांशु दूगड़, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष लोकेश सेठिया आदि ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

मैराथन दौड़ नेहरू पार्क ताल मैदान से शुरू होकर शहर के मुख्य मार्ग से होते हुए प्राणनाथ हॉस्पिटल पहुंची, जहां सभा का आयोजन किया गया।

सभा के दौरान आयुर्वेद कॉलेज में देहदान करने वाले जगदीश प्रसाद इंसा और कॉमरेड भगत सिंह, नेत्रदान करने वाली पूजा देवी दूगड़, कांता देवी बुचा, लूणकरण बोथरा, ममता दफ्तरी, संतोष कुमार मालू आदि को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम के दौरान सभी अतिथियों और बड़ी संख्या में उपस्थित लोगों ने नेत्रदान संकल्प पत्र भरकर नेत्रदान का संकल्प लिया। सभा को संबोधित करते हुए कनकमल दूगड़ ने नेत्रदान के महत्व को बताया और स्वयं के देहदान की घोषणा की। पद्मभूषण देवेंद्र झाझड़िया ने मैराथन के धावकों को संबोधित करते हुए कहा कि फिट रहना एक बड़ी चुनौती है, इसलिए युवाओं को अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहना चाहिए और नियमित शारीरिक अभ्यास करना चाहिए।

पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने सभा को संबोधित करते हुए नेत्रदान को महान कार्य बताया और युवाओं को रोज दौड़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने 'फिट इंडिया, फिट राजस्थान' का संदेश भी दिया।

कार्यक्रम में देहदान और नेत्रदान करने वालों के परिजनों को सम्मानित किया गया। मैराथन दौड़ में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले ओमप्रकाश भाकर को भी सम्मानित किया गया।

तेरापंथ युवक परिषद सरदारशहर के अध्यक्ष लोकेश सेठिया ने इस आयोजन के प्रेरक विनोद करवा सहित सभी अतिथियों और धावकों का धन्यवाद किया और आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर पूरी तेरापंथ युवक परिषद टीम, तेरापंथी सभा अध्यक्ष राजेश बुचा, एवं अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

नवम मासिक प्रेक्षाध्यान शिविर संपन्न

सिरियारी।

आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान में प्रेक्षा कल्याण वर्ष के अंतर्गत नवम मासिक प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन मुनि धर्मेशकुमार जी के नमस्कार महामंत्र के साथ प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत प्रेक्षाध्यान गीत के संगान से हुई, जिसके पश्चात संस्थान के अध्यक्ष निर्मल कुमार श्रीश्रीमाल ने सभी साधकों का स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। मुनि धर्मेशकुमारजी ने विचार व्यक्त करते हुए कहा - साधना का मूल उद्देश्य है मोक्ष की प्राप्ति। निरंतर प्रयासरत व्यक्ति चाहे धीमी गति से चले, पर यदि वह रुके नहीं तो अंततः मंजिल तक अवश्य पहुंचता है।

मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने साधकों को संबोधित करते हुए कहा - स्वयं को जानने और देखने की एक विशेष विधा है — ध्यान साधना। आज का मानव दूसरों की त्रुटियां देखने में व्यस्त है, जबकि आत्म-विकास के लिए आवश्यक है कि वह अपनी कमियों को पहचानकर उन्हें दूर करे। यही मार्ग उसे आत्मा से परमात्मा बनने की दिशा में ले जाता है। मुनि सुविधिकुमार ने भी उपस्थित साधकों को प्रेरणा प्रदान की।

इस अवसर पर दीक्षार्थी बहन भावना बाफना और विनु सकलेचा ने अपने विचार प्रस्तुत किए। संस्थान की ओर से अध्यक्ष निर्मल श्रीश्रीमाल एवं उपाध्यक्ष उत्तमचंद सुखलेचा द्वारा दीक्षार्थी बहनों का अभिनंदन किया गया।

प्रशिक्षक पारस जैन ने भी ध्यान साधना की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। स्वागत भाषण उत्तमचंद संकलेचा ने दिया। आभार ज्ञापन हनुमानमल बरड़िया द्वारा किया गया।

मुमुक्षु मंगलभावना कार्यक्रम का हुआ आयोजन

डीडवाना।

साध्वी गुप्तिप्रभाजी के सान्निध्य में मुमुक्षु अंजलि का मंगलभावना कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि जीवन में जो गहरा बदलाव आता है, वही सच्चा दीक्षा-मार्ग है। केवल वेश बदलना संन्यास नहीं है; क्लेशों का परिवर्तन ही वास्तविक संन्यास है। मुमुक्षु अंजलि को संबोधित करते हुए साध्वीश्री ने प्रेरणा दी — अंतरमुखी बनकर जीवन में आगे बढ़ना, स्वयं को बेहतर बनाना। मिथ्यात्व के मैल को साफ करने के लिए फ़िल्टर बनना, थर्मामीटर की तरह कषायों को नापने का अभ्यास करना।

साध्वी कुसुमलता जी ने कहा कि — जिस लक्ष्य से तुम दीक्षा मार्ग पर अग्रसर हो रही हो, उसमें सदैव गतिमान और निष्ठावान रहना। साध्वी मौलिकयशा जी एवं साध्वी भावितयशा जी ने संयुक्त रूप से एक भावपूर्ण गीत का संगान किया।

दीक्षार्थी मुमुक्षु अंजलि, सभा अध्यक्ष सुरेश चौपड़ा, महेंद्र संचेती, विनय चोपड़ा ने भावों की अभिव्यक्ति तथा महिला मंडल गीत की सुंदर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का मंगलाचरण कोलकाता से पधारी उपासिका निर्मला दुधोड़िया ने किया।

वर्षीतप तपस्वियों का अभिनन्दन समारोह

छोटी खाटु।

वर्षीतप तपस्वियों के अभिनंदन हेतु जूम मीटिंग का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में छोटी खाटू के निवासी-प्रवासी श्रावकों ने भाग लेते हुए तपस्वियों का अभिनंदन किया।

मीटिंग की अध्यक्षता संस्था शिरोमणि महासभा के यशस्वी अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने की। नमस्कार महामंत्र का उच्चारण शायर भंडारी ने जयपुर ने किया, जबकि मंगलाचरण महिला मंडल छोटीखाटू की बहनों द्वारा सभा भवन से प्रस्तुत किया गया। छोटी खाटू तेरापंथ सभा अध्यक्ष डालमचंद धारीवाल ने सभी तपस्वियों का भावपूर्ण अभिनंदन किया।

महासभा के पूर्व महामंत्री प्रफुल्ल बेताला ने सारगर्भित वक्तव्य प्रस्तुत किया। रेणु बोथरा ने तपस्वियों के सम्मान में एक सुंदर वीडियो प्रस्तुति दी, जिसका संकलन गणपत भंडारी ने किया। अभातेमम की पूर्व अध्यक्ष नीलम सेठिया, महिला मंडल खाटू की अध्यक्ष श्वेता भंडारी एवं महिला मंडल दिल्ली की मंत्री सुमन भंडारी ने भी तपस्वियों के प्रति अपने अनुमोदना स्वर प्रस्तुत किए। आचार्य श्री महाश्रमण मर्यादा महोत्सव समिति, छोटीखाटू के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया का विशेष वक्तव्य रहा।

उन्होंने महोत्सव के लिए तन, मन, धन से सहयोग का आह्वान किया। इस अवसर पर प्रवासी श्रावक-श्राविकाओं ने गीत, वक्तव्य एवं भावों के माध्यम से तपस्वियों का अभिनंदन किया।

2624वें भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर श्रद्धासक्ति कार्यक्रम

प्रज्ञा विहार, कांकरोली

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी रचनाश्री जी एवं श्रमण संघ उपप्रवर्तक कोमल मुनि जी म.सा. की सुशिष्या साध्वी एषणाश्री जी के सान्निध्य में महावीर मंच कांकरोली द्वारा आयोजित 2624वाँ महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव प्रज्ञा विहार, कांकरोली में उत्साहपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत शोभायात्रा से की गई, जिसमें समस्त जैन समाज के लोगों ने भाग लिया। शोभायात्रा द्वारकेश चौक से प्रारंभ होकर अपने गंतव्य स्थान प्रज्ञा विहार पहुँची, जहाँ मंचीय कार्यक्रम की शुरुआत हुई। विभिन्न झांकियाँ, महिला मंडल और ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा दी गई प्रस्तुतियाँ शोभायात्रा के विशेष आकर्षण रहे।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए साध्वी रचनाश्री जी ने कहा - भगवान महावीर ने जो उपदेश दिए वे आज के विश्व की समस्याओं का सटीक समाधान हैं। भगवान महावीर ने छह जीव निकायों के प्रति संयम का संदेश दिया, किंतु आज पृथ्वीकाय, अपकाय, तेजस्काय, वायुकाय और वनस्पतिकाय को मनुष्य प्रदूषित कर उनका हनन कर रहा है, जो विश्व के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहा है। यदि व्यक्ति छह जीव निकायों के प्रति संयमित हो जाए और अपनी इच्छाओं पर अंकुश लगा ले, तो वह न केवल पापों से बच सकता है, बल्कि विश्व की समस्याओं का समाधान भी कर सकता है। केवल भगवान की पूजा-अर्चना करना ही पर्याप्त नहीं है, उनके सिद्धांतों को जीवन में उतारना ही महावीर जयंती मनाने की सच्ची सार्थकता है। साध्वी एषणाश्री जी ने इस अवसर पर कहा - 'महावीर' शब्द के चार अक्षर म, ह, व, र का अर्थ ही सारगर्भित है— म - महान बनो, ह - हिम्मत रखो, व - वचन निभाओ और र - रहम करो।

साध्वी आर्याप्रभा जी ने 'प्रभु महावीर भगवान तेरा सबसे ऊँचा स्थान' गीत प्रस्तुत किया। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी संस्थान कांकरोली के अध्यक्ष लाभचंद बोहरा, मंत्री धनेंद्र मेहता, श्रमण संघ कांकरोली के अध्यक्ष महेश पगारिया, ज्ञान गच्छ संघ कांकरोली के अध्यक्ष एवं मंत्री, दिगंबर जैन समाज कांकरोली के अध्यक्ष कमल जैन एवं मंत्री सुनील, और जैन मूर्ति पूजक संघ कांकरोली के अध्यक्ष विमल पोरवाल सहित सकल संघ के पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे। इस अवसर पर लोकप्रिय विधायक दीप्ति माहेश्वरी ने जैन धर्म की महानता का उल्लेख करते हुए महावीर जयंती की शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। कार्यक्रम का मंगलाचरण साध्वी नमनप्रभा जी और साध्वी प्राज्ञप्रभा जी ने किया। महावीर मंच के अध्यक्ष दिनेश बाबेल ने अध्यक्षीय भाषण दिया एवं मंत्री सूरजमल रातडिया ने आभार ज्ञापन किया। संयोजन राकेश पगारिया ने किया।

हैदराबाद

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम हैदराबाद द्वारा महावीर जन्म कल्याणक के शुभ अवसर पर युवाओं के करियर मार्गदर्शन हेतु नुमाइश मैदान में करियर काउंसलिंग स्टॉल का आयोजन किया गया जिसमें युवकों एवं युवतियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। इस पहल का उद्देश्य छात्रों को उनके करियर विकल्पों के प्रति मार्गदर्शन प्रदान करना और उनके उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में सहायता करना था। इस स्टॉल में अनुभवी प्रोफेशनल्स ने छात्रों के साथ संवाद कर उन्हें विभिन्न करियर विकल्पों, आवश्यक कौशलों और उच्च शिक्षा के अवसरों के बारे में जानकारी दी।

TPF की टीम ने आयोजन को सफल बनाने में सक्रिय भूमिका निभाई। कार्यक्रम में TPF के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष नरेश कठोतिया, राष्ट्रीय सहमंत्री मोहित बैद, नेशनल फेमिना संयोजिका रक्षिता बोहरा, हैदराबाद शाखा अध्यक्ष विरेंद्र घोषल, पूर्व अध्यक्ष पंकज संचेती एवं अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे। संयोजिका दीक्षा सुराना और नवीन सुराना के नेतृत्व में प्रोफेशनल्स ने विद्यार्थियों के लिए एक उत्साहपूर्ण, सहयोगात्मक और प्रेरणादायक माहौल सुनिश्चित किया।

कृष्णराजनगर

साध्वी सिद्धप्रभाजी के सान्निध्य में चावत भवन, के.आर.नगर में भगवान महावीर का 2624 वाँ जन्म कल्याणक महोत्सव कार्यक्रम सकल जैन समाज द्वारा आयोजित किया गया। महामन्त्रोच्चारण द्वारा कार्यक्रम के शुभारम्भ के पश्चात साध्वी वृन्द द्वारा मंगलाचरण किया गया। मनीष बोहरा द्वारा स्वागत वक्तव्य के पश्चात कन्याओं ने कव्वाली प्रस्तुत की। साध्वी मलययशाजी ने कविता के माध्यम से महावीर भगवान को श्रद्धा समर्पित की। साध्वी दीक्षाप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में महावीर को मानने के साथ-साथ महावीर की प्रेरणा मानने की बात कही। साध्वी वृंद द्वारा 'बोलती तस्वीर महावीर की' जीवन झांकी का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

साध्वी सिद्धप्रभाजी ने अपने उद्बोधन में महावीर के प्रमुख 3 सिद्धांत अहिंसा, अनेकांत, अपरिग्रह का मार्मिक विवेचन किया और कहा संप्रदाय लाइसेंस नहीं, जीवन सच्चे धर्म का आवरण हो। जैन समाज को अपनी संस्कृति सुरक्षित रखने का सतत प्रयास करना चाहिए। साध्वीश्री ने सामाजिक संगठनों को Quantity की अपेक्षा Quality पर अधिक फोकस करने की प्रेरणा देते हुए सबको संकल्प करवाया कि हम बाहरी देखादेखी को छोड़ अपनी संस्कृति के अनुरूप सभी कार्यक्रम संचालित करेंगे। भावेश कोठारी, करिश्मा चावत, महिला मंडल ने अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी। कार्यकम का कुशल संचालन साध्वी आस्थाप्रभाजी ने किया।

बालोतरा

तेरापंथ भवन, अमृत सभागार में साध्वी रतिप्रभा जी एवं साध्वी मेघप्रभा जी के सान्निध्य में भगवान महावीर का 2624वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव कार्यक्रम उत्साहपूर्वक आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। सर्वप्रथम मंगलाचरण में प्रकाश श्रीश्रीमाल ने अपने सुमधुर गीत के माध्यम से भगवान महावीर की जीवन झांकी प्रस्तुत की। साध्वी रतिप्रभा जी ने अपने आराध्य का स्मरण करते हुए भगवान महावीर के अहिंसा, अनेकांत एवं अपरिग्रह के सिद्धांतों तथा उनके आध्यात्मिक जीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्रभु महावीर के सिद्धांत न केवल व्यक्ति विशेष, बल्कि सम्पूर्ण समाज के लिए हितकारी हैं। आज के युग में, जब समाज अनेक कुरीतियों, समस्याओं एवं हिंसा से जूझ रहा है, तब महावीर की शिक्षाएँ अधिक प्रासंगिक हो गई हैं। साध्वी ध्यानप्रभा जी ने कहा, "भगवान महावीर ने अनेक सिद्धांत बताए। हम यदि उनके बताए मार्ग पर चलें, तो अपना जीवन आध्यात्मिक रूप से समृद्ध, सुदृढ़ एवं लक्ष्य की ओर उन्मुख बना सकते हैं।"

साध्वी मेघप्रभा जी ने कहा, "हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें भगवान महावीर का शासन मिला। वे सदैव सादगी, संयम और ध्यान-साधना से जुड़े रहे। यदि हम भी उनके पथ का अनुसरण करें, तो वर्तमान जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान पाया जा सकता है।" साध्वी कलाप्रभा जी ने अपने वक्तव्य और कविता के माध्यम से प्रभु महावीर की महानता, सरलता और समता से युक्त जीवन के बारे में बताया। साध्वियों ने सामूहिक गीत के माध्यम से भगवान महावीर स्वामी के गुणों एवं उनके 14 स्वप्नों को सुंदर रूप में प्रस्तुत किया।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष महेन्द्र वैद ने अपने वक्तव्य में भगवान महावीर के सिद्धांतों की विवेचना की। महिला मंडल ने सामूहिक गीत के माध्यम से भगवान महावीर की स्तुति करते हुए उनके दर्शन को उजागर किया। श्रावक पारसमल सालेचा ने भी गीत के माध्यम से अपनी भावनाएँ प्रकट कीं। संचालन साध्वी मनोज्ञयशा जी ने किया।

वाशी

'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभाजी एवं 'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन, वाशी (नवी मुंबई) एवं श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, वाशी नवी मुंबई द्वारा भगवान महावीर का 2624वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव कार्यक्रम भव्य रूप से आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के जाप से हुआ। मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल, वाशी द्वारा प्रस्तुत किया गया। स्वागत वक्तव्य तेरापंथी सभा वाशी के अध्यक्ष पंकज चंडालिया, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अरविंद खाटेड, भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन अध्यक्ष ललित बाफना, तथा तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष रेखा कोठारी द्वारा दिया गया। इसके अतिरिक्त तेरापंथ सभा घाटकोपर के अध्यक्ष शांतिलाल कोठारी एवं महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल सभा के अध्यक्ष सुरेश डागलिया ने भी अपने विचार साझा किए।

'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी ने भगवान महावीर के जीवन और इतिहास का विश्लेषण कर उपस्थित जनों को लाभान्वित किया। 'शासनश्री' साध्वी मंजूरेखा जी ने भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांतों पर प्रकाश डालते हुए श्रावक समाज को प्रेरणा प्रदान की। साध्वी शिवमाला जी ने अपने विचार व्यक्त किये। सहवर्ती साध्वियों ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त कीं। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा एक नाटक की प्रभावशाली प्रस्तुति दी गई।

'तेरापंथ सभा वाशी आपके द्वार' पहल के अंतर्गत तेरापंथ सभा वाशी का आजीवन सदस्यता कार्ड लांच किया गया। तेरापंथ समाज वाशी के तत्वावधान में उत्कृष्ट सेवाओं के मूल्यांकन के आधार पर कार्यकर्ता मिलन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें समर्पित कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया। साथ ही वर्षीतप तपस्वी भाई-बहनों का भी सम्मान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन तेरापंथ सभा के मंत्री पवन परमार ने किया तथा आभार ज्ञापन तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री सीमा मेहता ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में सभी संस्थाओं के पदाधिकारी एवं गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम में नवी मुंबई एवं मुंबई क्षेत्र से लगभग 600 श्रावक-श्राविकाओं एवं पदाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

फ्रीडम पार्क, बेंगलुरु

महावीर जयंती के पावन अवसर पर टीपीएफ बेंगलुरु वेस्ट द्वारा टीपीएफ परामर्श शिविर का सफल आयोजन किया गया। शिविर में समाज के अनेक लोगों ने मेडिकल, लीगल, टैक्सेशन और एजुकेशन क्षेत्रों के विशेषज्ञों से परामर्श प्राप्त किया।

इस अभिनव पहल के माध्यम से टीपीएफ ने 700 से अधिक लोगों को 'टीपीएफ परामर्श WhatsApp चैटबॉट' के बारे में जानकारी दी, वहीं 50 से अधिक विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों ने करियर काउंसलिंग का लाभ लिया। ऑनलाइन प्रचार-प्रसार के माध्यम से यह प्रोजेक्ट 5000 से अधिक लोगों तक प्रभावी रूप से पहुँचा। कार्यक्रम में टीपीएफ साउथ ज़ोन अध्यक्ष विक्रम कोठारी, पूर्व नेशनल चीफ ट्रस्टी एमसी बालडोटा, टीपीएफ बेंगलुरु सेंट्रल अध्यक्ष पुष्पराज चोपड़ा आदि अनेक पदाधिकारियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

इस आयोजन को सफल बनाने में संयोजक रचना बाबेल, सीए मोनिका गांधी, विशेषज्ञ विवेक सेठिया, निर्मला चोपड़ा, डिंपल जैन, डॉ. मनीषा तथा राष्ट्रीय सह-संयोजिका टीपीएफ परामर्श मीनाक्षी चोपड़ा का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम को दिशा देने में टीपीएफ बेंगलुरु वेस्ट अध्यक्ष ललित बेंगानी और मंत्री कौशल खटेड़ की भी अहम भूमिका रही।

संक्षिप्त खबर

विश्व नवकार महामंत्र दिवस का आयोजन

भिवानी। विश्व नवकार महामंत्र दिवस के अवसर पर सकल जैन समाज द्वारा प्रेक्षा विहार में सामूहिक आयोजन किया गया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष सन्मति कुमार जैन ने सभी का स्वागत किया। स्थानकवासी समाज के अध्यक्ष पवन कुमार जैन एडवोकेट ने अपने विचार व्यक्त किये। सकल जैन समाज के लोगों ने बहुत ही उत्साह व लय बद्ध नवकार महामंत्र का जाप किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन महिला मंडल अध्यक्षा सीमा जैन ने किया। आभार ज्ञापन अशोक जैन ने किया।

योग कार्यक्रम का आयोजन

दिल्ली। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के आयाम 'FIT YUVA HIT YUVA' के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद, दिल्ली ने रोहिणी क्षेत्र के जापानी पार्क में योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 40 प्रतिभागियों ने सक्रिय भागीदारी निभाई। इस विशेष अवसर पर प्रशिक्षिका समिता द्वारा सभी प्रतिभागियों को योगाभ्यास करवाया गया। नियमित योग के अभ्यास से होने वाले लाभों की विस्तृत जानकारी दी गई।

निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

राजाजीनगर। भगवान महावीर स्वामी के 2624वें जन्म कल्याणक के उपलक्ष में तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम द्वारा मानव सेवा के अंतर्गत जैन युवा संगठन द्वारा फ्रीडम पार्क, कुंडलपुर नगरी में आयोजित भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव में निःशुल्क मधुमेह, रक्तचाप, डेंटल चेक-अप एवं त्वचा संबंधित रोगों का परामर्श प्रदान किया गया। कैम्प की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। रैंडम ग्लूकोमीटर से ब्लड शुगर रक्तचाप की जाँच कर चिकित्सकीय परामर्श भी करवाया गया। त्वचा विशेषज्ञ डॉ.सुनील कुमार ने त्वचा संबधित रोगों का परामर्श प्रदान किया। लगभग पांच घंटे तक चले इस कैंप में 180 लोगों की ब्लड शुगर, रक्तचाप जांच एवं 148 सदस्यों की डेंटल जांच की गई और 69 सदस्यों ने त्वचा से सम्बंधित रोगों का त्वचा विशेषज्ञ से परामर्श प्राप्त किया। तेयुप सदस्यों ने एटीडीसी श्रीरामपुरम द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवाएं, डॉक्टरों की उपलब्धता एवं अन्य जानकारी से सभी को अवगत कराया। शिविर के सुव्यवस्थित आयोजन में तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया के नेतृत्व में तेयुप सदस्यों का विशेष श्रम नियोजित हुआ।

रक्तदान शिविर का आयोजन

साउथ कोलकाता। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद् साउथ कोलकाता ने रक्तदान शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन में किया। सर्वप्रथम सामूहिक नमस्कार महामंत्र का जाप हुआ तत्पश्चात रक्तदान शिविर प्रारंभ किया गया। साउथ सभा से मुख्य न्यासी तुलसी दुगड़, अध्यक्ष बिनोद चोरड़िया, सह–मंत्री मनोज दुगड़, तेयुप साउथ कोलकाता एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम कोलकाता साउथ के कार्यकारिणी एवं कार्यसमिति सदस्यों की विशेष उपस्थिति रही। कुल 112 रक्त दाताओं ने रक्तदान किया।

❖ इन्द्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।
-आचार्य श्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **राजलदेसर।** संदीप कुंडलिया की धर्मपत्नी दीक्षा कुंडलिया के नूतन प्रतिष्ठान The Treat Adda का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से शांतिपुर में हुआ। संस्कारक विनीत लूणिया, बजरंग लाल डोसी एवं छतरसिंह चौरड़िया ने विधि-विधान व मंगल मंत्रोच्चार से शुभारंभ संस्कार सानन्द संपादित करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **साउथ कोलकाता।** सुमित्रा सेठिया (सुपुत्री बजरंग लाल सेठिया) का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से उनके नवीन निवास स्थान विक्टोरिया विस्ता, कोलकाता में जैन संस्कारक रवि छाजेड़ ने मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न करवाया।

नामकरण संस्कार

■ **साउथ कोलकाता।** राजलदेसर निवासी - साउथ कोलकाता प्रवासी रमेश-सुमन चंडालिया की पौत्री एवं प्रतीक-दिविशा चंडालिया की पुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक महावीर दुगड़ द्वारा पूरे मंत्रोच्चार के साथ सम्पादित किया गया।

जैन विद्या परीक्षा प्रमाण पत्र वितरण

लाडनूं।

तेरापंथ की राजधानी लाडनूं में समण संस्कृति संकाय, जैन विश्व भारती द्वारा आयोजित जैन विद्या परीक्षा 2024 के प्रमाण पत्र वितरण का कार्यक्रम श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा लाडनूं के तत्वावधान में तथा सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी कार्तिकयशाजी के सान्निध्य में ऋषभ द्वार पहली पट्टी में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र से हुआ। तेरापंथी सभा के मंत्री राकेश कोचर, तेरापंथ महिला मंडल मंत्री राज कोचर, उपसिका डॉक्टर सुशील बाफना ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी तथा सभी परीक्षार्थियों का उत्साह वर्धन किया।

इस अवसर पर साध्वी कार्तिकयशा जी ने कहा कि हमेशा अपने ज्ञान की वृद्धि करनी चाहिए, ज्ञान सर्वोपरि है। उन्होंने सभी को जैन विद्या परीक्षा के फॉर्म भरने की प्रेरणा दी। नीता नाहर ने भाग 4 में 98% के साथ मेरिट में तृतीय स्थान प्राप्त किया। स्पेशल रैंक, फर्स्ट डिवीजन, सेकंड डिवीजन व पास हुए सभी परीक्षार्थियों को पारितोषिक व प्रमाण पत्र वितरण तेरापंथी सभा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल से राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य प्रीति घोषल, तेरापंथी सभा से वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजेंद्र खटेड़, कोषाध्यक्ष महेंद्र बाफना, हेमन्त बैद सहित अच्छी संख्या में श्रावक समाज उपस्थित रहा।

कार्यक्रम का कुशल संचालन जैन विद्या केंद्र व्यवस्थापिक किरण बरमेचा ने किया। कार्यक्रम में आगंतुकों का आभार सह केंद्र व्यवस्थापिका नीता नाहर ने व्यक्त किया।

बेंगलुरु शहर की सीमा में मंगल प्रवेश

राजराजेश्वरी नगर।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी पुण्ययशा जी ठाणा-4 का राजराजेश्वरी नगर के चातुर्मास हेतु बेंगलुरु महानगर की सीमा में मंगल प्रवेश हुआ। इस अवसर पर बेंगलुरु के समस्त सभा-संस्थाओं, युवक परिषद, महिला मंडल के पदाधिकारीगण एवं श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

महानगर की सीमा से विहार करते हुए साध्वीवृंद, श्रावक समाज के साथ टी. दासरहल्ली स्थित तेरापंथ भवन पधारे, जहाँ स्वागत-अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री के मुखारविंद से मंगल मंत्रोच्चार के साथ हुई।

तेरापंथी सभा की उपाध्यक्ष सरोज आर. बैद ने विहार की सुखसाता की पृच्छा करते हुए साध्वीवृंद का भावभीना स्वागत किया। तेयुप अध्यक्ष बिकाश छाजेड़ तथा तेममं की अध्यक्षा सुमन पटावरी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। सभा के मंत्री गुलाब बांठिया तथा महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति दी गई।

साध्वी पुण्ययशा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि गुरुकृपा से ही हम इतना लंबा विहार कर प्रथम बार दक्षिण भारत की यात्रा पर आए हैं। अब बेंगलुरु के विभिन्न क्षेत्रों की सार-सम्भाल करते हुए चातुर्मासार्थ राजराजेश्वरी नगर जाना है। गुरु इंगित की आराधना करते हुए श्रावकों में धार्मिक भावना का विकास करना ही हमारी प्राथमिकता रहेगी। साध्वी विनीतयशा जी, साध्वी वर्धमानयशा जी एवं साध्वी बोधिप्रभा जी ने भी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की।

भायंदर, मुंबई से रास्ते की सेवा रत धर्मेन्द्र बोथरा का जैन पट्ट एवं साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। तत्पश्चात धर्मेन्द्र बोथरा ने भी अपने विचार रखे। तेरापंथ महिला मंडल, टी. दासरहल्ली ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। सभा अध्यक्ष भगवतीलाल मांडोत और तेयुप अध्यक्ष कन्हैयालाल गांधी ने स्वागत वक्तव्य दिया।

राजराजेश्वरी नगर सभा अध्यक्ष राकेश छाजेड़ के कुशल नेतृत्व में मंत्री गुलाब बांठिया ने कार्यक्रम का सुंदर संयोजन किया। बसों की व्यवस्था महेन्द्र भरूंट एवं शारदा बैद द्वारा सुचारु रूप से की गई।

संबोधि

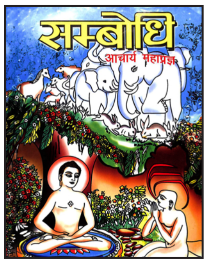

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

चार संज्ञाएं और उनके कारण

५४. रिक्तोवरतया मत्या, क्षुधावेद्योदयेन च।
तस्यार्थस्योपयोगेनाऽऽहारसंज्ञा प्रजायते ।।

आहारसंज्ञा चार कारणों से उत्पन्न होती है-

१. खाली पेट होना।

२. भोजन संबंधी बातें सुनना तथा भोजन को देखना।

३. क्षुधा वेदनीय कर्म का उदय।

४. भोजन का सतत चिंतन करना।

५५. हीनसत्त्वतया मत्या, तस्यार्थस्योपयोगेन,
भयवेद्योदयेन भयसंज्ञा च प्रजायते।।

भयसंज्ञा चार कारणों से उत्पन्न होती है-

१. बल की कमी।

२. भय संबंधी बातें सुनना तथा भयानक दृश्य देखना।

३. भय-वेदनीय कर्म का उदय।

४. भय का सतत चिंतन करना।

५६. चितमांसरक्ततया, तस्यार्थस्योपयोगेन,
मत्या मोहोदयेन च मैथुनेच्छा प्रजायते ।।

मैथुनसंज्ञा चार कारणों से उत्पन्न होती है-

१. मांस और रक्त की वृद्धि।

२. मैथुन संबंधी बातें सुनना तथा मैथुन बढ़ाने वाले पदार्थों को देखना।

३. मोहकर्म का उदय।

४. मैथुन का सतत चिंतन करना।

५७. अविमुक्ततया मत्या, लोभवेद्योदयेन च।
तस्यार्थस्योपयोगेन, संग्रहेच्छा प्रजायते ।।

परिग्रहसंज्ञा चार कारणों से उत्पन्न होती है-

१. अविमुक्तता निर्लोभता न होना।

२. परिग्रह की बातें सुनना और धन आदि को देखना।

३. लोभ-वेदनीय कर्म का उदय।

४. परिग्रह का सतत चिंतन करना।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

संघ - व्यवस्था

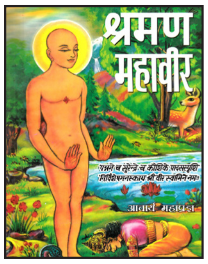

कुछ साधु परिव्रजन कर रहे हैं। उन्हें पता चला कि इस गांव में कोई रुग्ण साधु हैं। वे वहां जाएं और सेवा की आवश्यकता हो तो वहां रहें। यदि आवश्यकता न हो तो अन्यत्र चले जाएं। रुग्ण साधु का पता चलने पर वहां न जाएं तो वे संघीय अनुशासन का भंग करते हैं और प्रायश्चित्त के भागी होते हैं।

भगवान् ने ग्लान साधु की सेवा को साधना की कोटि का मूल्य दिया। संघीय सामाचारी के अनुसार एक मुनि आचार्य के पास जाकर कहता– 'भंते! मैं आवश्यक क्रिया से निवृत्त हूं। अब आप मुझे कहां नियोजित करना चाहते हैं? यदि सेवा की अपेक्षा हो तो मुझे उसमें नियोजित करें। उसकी अपेक्षा न हो तो मुझे स्वाध्याय में नियोजित करें।'

भगवान् ने कहा– 'जो ग्लान साधु की सेवा करता है, वह मेरी सेवा करता है। ग्लान साधु की अग्लानभाव से सेवा करने वाला मेरी भूमिका तक पहुंच जाता है, तीर्थंकर हो जाता है।'

इस प्रकार सामुदायिकता के तत्त्वों को समुचित मूल्य देकर भगवान् ने संघ और उसकी व्यवस्थाओं को प्राणवान् बना दिया।

संघातीत साधना

भगवान महावीर तीर्थंकर थे। जो व्यक्ति सत्य का साक्षात्कार और प्रतिपादन-दोनों करता है, वह तीर्थंकर होता है। उस समय भारतीय धर्म की दो धाराएं चल रही थीं-एक शास्त्र की और दूसरी तीर्थंकर की।

मीमांसा दर्शन ने तर्क उपस्थित किया कि शरीरधारी व्यक्ति वीतराग नहीं हो सकता। जो वीतराग नहीं होता, वह सर्वज्ञ नहीं हो सकता। जो सर्वज्ञ नहीं होता, उसके द्वारा प्रतिपादित शास्त्र प्रमाण नहीं हो सकता। इस तर्क के आधार पर मीमांसकों ने पौरुषेय (पुरुष द्वारा कृत) शास्त्र का प्रामाण्य स्वीकार नहीं किया। वे वेदों को अपौरुषेय (ईश्वरीय) मानकर उनका प्रामाण्य स्वीकार करते थे।

श्रमण दर्शन का तर्क था कि शास्त्र वर्णात्मक होता है, इसलिए वह अपौरुषेय नहीं हो सकता। पुरुष साधना के द्वारा वीतराग हो सकता है। वीतराग पुरुष कैवल्य या बोधि प्राप्त कर लेता है। कैवल्य–प्राप्त पुरुष का वचन प्रमाण होता है।

बौद्ध साहित्य में महावीर, अजितकेशकंबली, पकुधकात्यायन, गोशालक, संजयवेलट्ठिपुत्त और पूरणकश्यप इन्हें तीर्थंकर कहा गया है। बुद्ध भी तीर्थंकर थे, शंकराचार्य ने कपिल और कणाद को भी तीर्थंकर कहा है।

जैन साहित्य में महावीर को आदिकर कहा गया है। परम्परा का सूत्र उन्हें चौबीसवां और इस युग का अन्तिम तीर्थंकर कहता है। वास्तविकता यह है कि प्रत्येक तीर्थंकर आदिकर होता है। वह किसी पुराने शास्त्र के आधार पर सत्य का प्रतिपादन नहीं करता। वह सत्य का साक्षात्कार कर उसका प्रतिपादन करता है। इस दृष्टि से प्रत्येक तीर्थंकर पहला होता है, अन्तिम कोई नहीं होता।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री भारमल जी युग

साध्वीश्री चत्रूजी (गंगापुर) दीक्षा क्रमांक 100

साध्वीश्री शान्त स्वभावी और मधुर व्यवहारी थी। बड़ी विजयवती तथा सभी साध्वियों से मेलमिलाप रखने वाली थी। आपने तेरह वर्ष की संयम साधना में अनेक तप किये। आपने उपवास, बेले, तेले आदि थोकड़े बहुत बार किये। ऊपर में 62 दिन का तप किया। साध्वीश्री ने अंत में संलेखना तप किया जिसमें 5 तेले, 4 चोले किये। तत्पश्चात पंचोले के चौथे दिन रात्रि में चौविहार अनशन ग्रहण कर साढ़े चार पहर में अपना काम सिद्ध किया।

– साभार: शासन समुद्र –

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मानुशासन का रहस्य

प्रवृत्ति के तीन साधन हैं-मन, वाणी और शरीर। मन से व्यक्ति सोचता है, वाणी से बोलता है और शरीर से अन्यान्य क्रियाएं करता है। चिन्तन, भाषा और शारीरिक क्रियाओं का नियामक और परिष्कारक तत्त्व है आत्मानुशासन।

प्रसिद्ध जैन आगम उत्तराध्ययन में उपदिष्ट है- "**वरं में अप्पा दंतो संजमेण तवेण य।**" श्रेष्ठ है कि व्यक्ति संयम और तप के द्वारा आत्मानुशासन को साधे।

क्या आत्मा पर अनुशासन किया जा सकता है? कहां है आत्मा हमारे सम्मुख? हम न उसे आंखों से देख पाते हैं, न ही उसे छू पाते हैं, फिर कैसे करें उस पर अनुशासन। आत्मा हमारी दृष्टि का विषय नहीं है। हम उस पर सीधा अनुशासन का प्रहार नहीं कर सकते। हम आत्मा को नहीं पहचानते। पर मन, वचन, शरीर और इन्द्रियों से हम बहुत परिचित हैं। इन पर नियंत्रण कर लिया जाए तो आत्मानुशासन स्वतः सिद्ध हो जाएगा।

आत्मानुशासन का अर्थ है- **अपने शरीर पर अनुशासन।**

आत्मानुशासन का अर्थ है- **अपनी इन्द्रियों पर अनुशासन।**

आत्मानुशासन का अर्थ है- **अपनी वाणी पर अनुशासन।**

आत्मानुशासन का अर्थ है- **अपने मन पर अनुशासन।**

आत्मानुशासन का हृदय है-शरीर, इन्द्रियां, वाणी, और मन को पाप या अकरणीय कार्य में प्रवृत्त न होने देना। चिरपोषित राग-द्वेषात्मक संस्कारों से अभिप्रेरित होकर मन, वाणी, इन्द्रियां और शरीर दुष्प्रवृत्त होते रहते हैं। इन पर नियंत्रण का अभ्यास करना आध्यात्मिक साधना है। अथवा औदयिक और क्षायोपशमिक भाव के संघर्ष का नाम है साधना। मोहकर्म के उदय से विषय एवं कषाय में प्रवृत्त होता है। क्षायोपशमिक भाव (चेतना की निर्मलता का अंश) या संकल्प-शक्ति के द्वारा वह क्रोध आदि निषेधात्मक भावों के उदय को विफल बनाने का प्रयास करता है। दृढ़संकल्पिता हमारे विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। भगवान बुद्ध साधनावस्थित थे, बोधि प्राप्त नहीं हुई। एक दिन उन्होंने संकल्प किया -

इहासने शुष्यतु मे शरीरं, त्वगस्थिमांसं प्रलयं च यातु।
अप्राप्य बोधिं बहुकालदुर्लभां, नैवासनात् कायमिदं चलिस्यति।।

बोधि प्राप्त किये बिना मैं इस आसन को नहीं छोड़ूंगा, चाहे मेरा शरीर सूख जाए, त्वचा, अस्थियां और मांस नष्ट हो जाएं। यह संकल्प-शक्ति की पराकाष्ठा है।

आत्मानुशासी व्यक्ति मन, वचन और शरीर को दुष्प्रवृत्त देखते ही सतर्क हो जाए और तत्काल उन पर नियंत्रण कर ले।

युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी ने एक घोष दिया था- "**निज पर शासन फिर अनुशासन।**" परानुशासन की अर्हता है आत्मानुशासन। जो अपने पर अनुशासन कर सकता है, वह औरों पर भी अनुशासन कर सकता है। जो अपने पर अनुशासन नहीं कर सकता वह औरों पर अनुशासन कैसे करेगा?

जो व्यक्ति अपने संवेगों और आवेगों पर नियंत्रण नहीं कर सकता, वह आत्मानुशासी नहीं हो सकता। जो आत्मानुशासी नहीं होता, उसे परानुशासन में सफलता कैसे मिल सकती है?

आत्मानुशासन की सर्वोच्च भूमिका स्थितप्रज्ञ या ठियप्पा है। भगवत् गीता का शब्द है 'स्थितप्रज्ञ' और आयारो का शब्द है 'ठियप्पा' (स्थित आत्मा)। भगवद् गीता में 'स्थितप्रज्ञ' की एक परिभाषा इस प्रकार की गई है

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ! मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञ स्तदुच्यते।।

जो व्यक्ति अपनी समस्त कामनाओं का परित्याग कर देता है और अपने आप में संतुष्ट रहता है, वह स्थितप्रज्ञ कहलाता है। आयारो में निर्दिष्ट है-

एवं से उष्टियठियप्पा, अबहिलेस्से परिव्वए।

(क्रमशः)

मई 2025
सप्ताह के विशेष दिन

05 मई
भगवान अभिनन्दन निर्वाण, भगवान सुमतिनाथ जन्म कल्याणक

06 मई
भगवान सुमतिनाथ दीक्षा कल्याणक

06 मई
आचार्यश्री महाश्रमण 64वां जन्म दिवस

07 मई
भगवान महावीर केवलज्ञान कल्याणक

07 मई
आचार्यश्री महाश्रमण 16वां पदाभिषेक दिवस

09 मई
भगवान विमलनाथ च्यवन कल्याणक

10 मई
भगवान अजितनाथ च्यवन कल्याणक

11 मई
आचार्यश्री महाश्रमण 52वां दीक्षा दिवस (युवा दिवस)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री डालमचन्दजी युग

मुनिश्री रणजीतमलजी (पुर) दीक्षा क्रमांक 350

मुनिश्री दीक्षित होते ही तपः साधना एवं सेवाभावना में संलग्न हो गए। तपश्चर्या के क्षेत्र में आपने 'तपः सूर अणगार' की उक्ति को चरितार्थ किया। मुनिश्री उग्र तपस्वी हुए। मुनिश्री के विशाल तप का लेखा-जोखा इस प्रकार है- उपवास/2956, 2/37, 3/8, 4/11, 5/10, 7/2, 8/1, 10/1, 11/1, 15/1, 21/1, 30/1, 31/1, 45/1, 51/1, 60/2 (पानी के आगार से) 101/1, 182/1 (आछ के आगार से) इसके अतिरिक्त छाछ के आगार से 47 दिन का तप किया। सं 1974 से एकान्तर-तप चालू किया जो लगभग 15 वर्ष तक चला तप के कुल दिन 4288 है जिनके 11 वर्ष 10 महिने 28 दिन होते है।

- साभार: शासन समुद्र -

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
28 अप्रैल - 04 मई, 2025
हे प्रभो! यह तेरापंथ

2624वें भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर श्रद्धासक्ति कार्यक्रम

बोइसर, मुंबई

जैन उपाश्रय में सकल जैन संघ द्वारा समायोजित भगवान महावीर जन्मकल्याणक दिवस पर उपस्थित विशाल जैन समाज को सम्बोधित करते हुए प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा, "भगवान महावीर का जन्म समता, अहिंसा और संयम का जन्मदिन है। महावीर दर्शन में हर समस्याओं का समाधान प्राप्त हैं। भगवान महावीर के अनुयायियों को चिन्तन करना है उनका जीवन जैनत्व के अनुकूल है या नहीं। निरीक्षण करने की आवश्यकता है- क्या वास्तव में आप जैन हैं। महावीर को मानना सरल है, पर महावीर की मानना कठिन है। साध्वीश्री ने आगे कहा, "मर्यादाओं का होता अतिक्रमण अशांति पैदा कर रहा है। भगवान महावीर ने कहा- हर आत्मा खुद को टटोले। शुद्ध आचार और विचार के द्वारा जीवन यात्रा चलाएं। तब ही सुख और आनन्द की अनुभूति कर पाएंगे। संकल्प करें, आपके कारण दूसरे को कठिनाई न हो। वेद पढ़े या नहीं, वेदना को अवश्य पढ़ें। भावी पीढ़ी में जैनत्व के संस्कार संप्रेषित करें। तभी महावीर जयन्ती मनाने की सार्थकता है। साध्वी राजुलप्रभा जी ने कहा, "महावीर की साधना प्रकाश की साधना है, सबके भीतर कारुण्य भाव जागे। साध्वी डॉ. शौर्यप्रभा जी ने कहा, "महावीर दर्शन कहता है- परिस्थितयां बदलती रहे पर अपनी सौम्य प्रवृत्ति को न बदलें। साध्वियों ने महावीर अभ्यर्थना प्रस्तुत की। तेरापंथ ज्ञानशाला, जैन पाठशाला के बच्चों ने भावपूर्ण प्रस्तुतियां प्रदर्शित की। तेरापंथ महिला मंडल एवं श्रमण संघ महिला मंडल ने गीत का संगान किया। श्रमण संघ की आयंबिल तप आराधिका साध्वी प्रफुल्ला जी ने कहा, "जैन समाज जैन संस्कारों को कायम रखे । भगवान महावीर की वाणी को आत्मसात करें - दुखों को सुख से जीने का प्रयास करें। साध्वी महिमाश्री जी ने कहा, "अहिंसा समता, विनय, विवेक चेतना वाले व्यक्ति ही महावीर भक्त बन सकते हैं। महावीर के सिद्धान्तों पर चलना ही उनके जन्मदिन पर किया जाने वाला पवित्र संकल्प हो। साध्वी महतीप्रभाजी और साध्वी परिज्ञाश्री जी ने मधुरगीत के साथ भगवान महावीर की स्तुति की। मूर्तिपूजक समाज की महिलाओं ने जन्म कल्याणक पर मन मोहक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम से पूर्व सम्पूर्ण जैन समाज की ओर से विशाल रैली का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रमण संघ के मंत्री लक्ष्मीलाल डोसी ने किया।

तोशाम

जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का 2624वां जन्म कल्याणक महोत्सव नगर में श्रद्धा एवं उल्लास के साथ दो चरणों में मनाया गया। प्रथम चरण में प्रातःकाल प्रभात फेरी का आयोजन किया गया, जो तेरापंथ भवन से प्रारंभ होकर नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई पुनः तेरापंथ भवन में सम्पन्न हुई। द्वितीय चरण में सायंकाल मुख्य कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ उपासिका मंजू जैन द्वारा प्रस्तुत स्वरचित गीतिका 'वीर प्रभु का नाम सदा अमर रहे' से हुआ। ज्ञानार्थियों नैतिक, देवांश, हार्दिक एवं जियांश ने भगवान महावीर पर आधारित कविता प्रस्तुत कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। ज्ञानार्थी लक्षित एवं अंश ने प्रश्नोत्तरी के माध्यम से भगवान महावीर के जीवन प्रसंगों को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा मंत्री शंकर जैन, शिक्षक पंकज जैन, ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका कमलेश जैन तथा प्रशिक्षिकाएं साक्षी जैन एवं नैन्सी जैन ने गीत, कविता एवं वक्तव्यों के माध्यम से अपने भाव प्रकट किए। ज्ञानशाला के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत नाटक में समता और अनुशासन के महत्व को प्रभावी रूप से दर्शाया गया। संचालन महिला मंडल मंत्री ज्योति जैन ने किया तथा समापन संघगान के साथ किया गया।

किशनगढ़

अणुव्रत चौक स्थित तेरापंथ भवन में जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के 2624वें जन्मकल्याणक महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत विविध गतिविधियाँ संपन्न हुईं, जिनमें प्रातःकालीन रैली विशेष आकर्षण रही। यह रैली तेरापंथ भवन से प्रारंभ होकर शहर के विभिन्न प्रमुख स्थलों से होती हुई पुनः तेरापंथ भवन पहुंची। आराध्य देव भगवान महावीर के प्रति आस्था व्यक्त करते हुए श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, युवक परिषद, महिला मंडल, कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला के बच्चे अपने-अपने गणवेश में नारों की गूंज और उत्साह के साथ शोभायात्रा की शोभा बढ़ा रहे थे। रैली के उपरांत तेरापंथ भवन में साध्वी शांताकुमारी जी आदि ठाणा-5 के सान्निध्य में मुख्य कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र के उच्चारण से हुआ। मंगलाचरण साध्वी जागृतयशा जी द्वारा महावीर अष्टकम के माध्यम से किया गया। स्वागत उद्बोधन तेरापंथ सभा की ओर से मानक चंद गेलड़ा ने प्रस्तुत किया। साध्वी चंद्रावती जी, साध्वी जीतयशा जी एवं साध्वी जागृतयशा जी ने सामूहिक गीत का संगान किया।

उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए साध्वी शांताकुमारी जी ने अपने उद्बोधन में कहा - आज सभी महावीर जयंती मनाते हैं—रैली निकालना, प्रवचन सुनना, भोजन का आयोजन करना—लेकिन यह सब केवल बाह्य रूप तक सीमित नहीं रहना चाहिए। हमें यह सोचना चाहिए कि यह मेरे भगवान महावीर का जन्म दिवस है, इस दिन को मैं समता और आत्मविकास का दिन कैसे बनाऊं? हमें कोई ऐसा संकल्प लेना चाहिए जो आत्मा को मोक्ष की ओर अग्रसर करे—जैसे क्रोध, राग-द्वेष को कम करने का प्रयास। तभी महावीर जयंती मनाना वास्तव में सार्थक होगा। कार्यक्रम में करुणा चंडालिया, कविता गेलड़ा, आकांक्षा संचेती, निशा चंडालिया एवं सरला कुंडलिया ने गीतों एवं विचारों के माध्यम से श्रद्धा सुमन अर्पित किए। ज्ञानशाला के बच्चों ने मनभावन सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा के मंत्री डॉ. अजय कुमार ने कुशलता से किया।

जसोल

भगवान महावीर का 2624वां जन्म कल्याणक महोत्सव श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। तेरापंथ भवन में 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा जी ने भगवान महावीर के जीवन पर प्रकाश डाला। साध्वी मार्दवयशाजी और साध्वी मधुरयशाजी ने भी प्रेरणादायक विचार प्रस्तुत किए। स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष भूपतराज कोठारी ने दिया। ज्ञानशाला प्रभारी डूंगरचन्द सालेचा ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा भगवान महावीर की माता त्रिशला द्वारा देखे गए चौदह स्वप्नों पर आधारित सुंदर नाटक प्रस्तुत किया गया और ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा भगवान महावीर स्वामी की अत्यंत रोचक जीवन झांकी प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम का सफल संचालन महिला मंडल अध्यक्ष कंचन देवी ढेलड़िया ने किया। इससे पहले प्रातः प्रभात फेरी का आयोजन हुआ, जो राजा चौक से प्रारंभ होकर पूरे गांव में भ्रमण करते हुए नाकोड़ा रोड स्थित भिक्षु नगर महाश्रमण विला में संपन्न हुई। रात्रि में आयोजित 'एक शाम भगवान महावीर के नाम' भक्ति संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें गायक कलाकार जाग्रति वडेरा ने भजनों की शानदार प्रस्तुति दी।

दिल्ली

तीर्थंकर प्रभु महावीर के 2624वें जन्म कल्याणक महोत्सव के उपलक्ष्य में तेरापंथ सभा के अंतर्गत संचालित ज्ञानशाला द्वारा अणुव्रत भवन में भक्तामर स्तोत्र प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका रितु छाजेड़ के वक्तव्य से हुई। प्रतियोगिता में छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं ने भक्तामर स्तोत्र की गाथाओं की अत्यंत सुंदर और भावपूर्ण प्रस्तुति दी, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा। सकल जैन समाज के कुल 29 बच्चों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। कार्यक्रम में भगवान महावीर जन्म कल्याणक समिति के अध्यक्ष राजकुमार सेठिया, मूर्तिपूजक संघ के अध्यक्ष ललितभाई लोड़ाया, तेरापंथ सभा अध्यक्ष पवन शामसुखा, मंत्री सुनील बैद, ज्ञानशाला संयोजक नोरतमल चोरडिया, तेयुप अध्यक्ष पंकज सुराणा, मंत्री अजित सांखला, सह प्रशिक्षिका मोनिका छाजेड़, रोनक चोरडिया तथा समाज के अनेक गणमान्य नागरिकों की गरिमामयी उपस्थिति रही। प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल की भूमिका उमा सांखला एवं मनीषा डाकलिया ने निभाई। सत्र संचालन रुचि सेठिया एवं प्रेक्षा पिंचा ने किया।

बेंगलुरु

भगवान महावीर की 2624वीं जन्म जयंती के पावन अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद बेंगलुरु द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एंड डेंटल केयर के तत्वावधान में फ्रीडम पार्क में एक विशाल निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में यूरिया, क्रिएटिनिन, यूरिक एसिड एवं कैल्शियम जैसे महत्वपूर्ण जांच परीक्षण किए गए। यह शिविर विशेष रूप से किडनी की कार्यक्षमता जांचने के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुआ। शिविर में 250 से अधिक लाभार्थियों ने सहभागिता की। शिविर के दौरान अनुभवी तकनीशियनों की टीम ने सेवा-भाव एवं पूर्ण निष्ठा के साथ सभी लाभार्थियों की जांच की। इस अवसर पर तेयुप बेंगलुरु अध्यक्ष विमल धारीवाल, उपाध्यक्ष मनीष भंसाली, तेरापंथ सभा मंत्री विनोद छाजेड़, टीपीएफ अध्यक्ष पुष्पराज चोपड़ा सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन एटीडीसी राजाजीनगर संयोजक रजत बैद के मार्गदर्शन एवं एटीडीसी आडुगुड़ी संयोजक पंकज सुराणा के अथक परिश्रम से संपन्न हुआ।

उत्तर हावड़ा

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में महावीर जयंती के अवसर पर 'एक शाम महावीर के नाम' भव्य भजन संध्या का सफल आयोजन उत्तर हावड़ा स्थित श्रीराम वाटिका में किया गया, जिसमें मुख्य संगायक के रूप में सूरत से पधारे नीलेश बाफणा ने भजनों की प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमार जी ने प्रभु भजनों का संगान करते हुए अपने उद्बोधन में कहा - "भगवान महावीर भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल नक्षत्र थे। वे ज्योतिर्धर पुरुष और अतीन्द्रिय चेतना के धनी थे। वे अपने युग के अप्रतिम और निर्भीक पुरुष थे। उनका जीवन संयम, साधना और समता से अनुप्राणित था। साढ़े बारह वर्ष तक सजग साधना करते हुए, भीषण उपसर्गों और परीषहों को जीतकर समता की उत्कृष्ट स्थिति प्राप्त कर वे तीर्थंकर महावीर बन गए। प्रभु महावीर ने जगत को अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह का संदेश दिया। उनके सिद्धांतों में आज के समय की अनेक समस्याओं का समाधान निहित है।" मुनि कुणाल कुमार जी ने भी सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। मुख्य संगायक नीलेश बाफणा ने एक के बाद एक प्रभावशाली भजनों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के मंत्री प्रवीण कुमार सिंघी ने दिया। इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ कन्या मंडल, राजेंद्र पींचा, डॉ. अरिहंत सिंघी ने भी प्रभु महावीर के प्रति अपनी श्रद्धा भावपूर्वक प्रस्तुतियों के माध्यम से व्यक्त की। आभार ज्ञापन महावीर दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन पूर्व मंत्री सुरेंद्र बोथरा ने किया। कार्यक्रम के विशिष्ट सहयोगी जतनलाल आनंद पारख एवं जुगल किशोर पवन कृष बोथरा का सभा द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम संयोजक सुरेंद्र बोथरा और मनोज बैद थे, जबकि श्रीराम वाटिका की समस्त व्यवस्था संदीप कुमार डागा की देखरेख में संपन्न हुई। कार्यक्रम में कार्यकर्ताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के 16वें महाप्रयाण दिवस पर विशेष

सफर सपने और समर्पण का

● साध्वी नीतिप्रभा ●

तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य परंपरा में दसवें आचार्य हुए हैं 'आचार्य श्री महाप्रज्ञजी', जिन्होंने समाज सुधार के निर्णयों के आधार पर धर्म, समाज, राष्ट्र, और विश्व मानव जाति को अपने प्रज्ञाबल से एक नई दिशा, एक नया आलोक दिया। सोई हुई मानवता को जगाकर उन्होंने एक अद्वितीय कार्य किया। उनकी साहित्यिक देन अद्भुत थी। इससे केवल तेरापंथी समाज ही नहीं, जैन समाज ही नहीं, बल्कि जैन-अजैन सभी लाभान्वित हुए हैं और हो रहे हैं।

आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के साहित्य से न जाने कितने सपनों ने साकार रूप लिया। न जाने कितनों की आँखों में अंजन आंजा होगा। न जाने कितनों के जीवन का पथदर्शक बना और बन रहा होगा। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी एक युगद्रष्टा होने के कारण नवीन समस्याओं के समाधानकर्ता, अध्यात्म और विज्ञान के समन्वयक के रूप में मानव जाति को रचनात्मक और सकारात्मक प्रतिपादन की राह दिखा गए। उनके प्रेरणा पाथेय से बहुतों ने अपने संजोए हुए सपनों को साकार रूप दिया।

'Have a big dream' – आचार्य श्री महाप्रज्ञजी फरमाया करते थे – सपने लेने हों तो बड़े लो। क्यों? इसके उत्तर में उनका चिंतन भी मिलता। जब सपने बड़े होंगे, कल्पना बड़ी-बड़ी होगी, तभी व्यक्ति उसे साकार करने हेतु अधिक परिश्रम करेगा। उसकी सुस्ती छूमंतर हो जाएगी और चुस्ती उसका सदा साथ निभाएगी। जब कल्पना ही छोटे दर्जे की होगी, तो उस कार्य के लिए चेतना प्रमादी बनी रहेगी।

मंजिल पर जब राही कदम बढ़ाता है, तो कहीं खड्डे, तो कहीं कीचड़, कहीं कंकड़, तो कहीं कठोर पत्थर, कहीं काँटे तो कहीं-कहीं फूल भी नजर आते हैं। उस समय महापुरुषों का यही संदेश होता है कि तुम उस-उस स्थान को, उस बिंदु को हाईलाइट करते जाओ जहाँ तुमने समस्याओं का सामना किया है, ताकि नए राहगीरों का उस पथ पर चलना सुगम हो जाए। सफलता की जितनी सीढ़ियाँ आपने पार की हैं, उन्हें याद कर अपने आप पर गर्व करो, ताकि भीतर का उत्साह बेकरार बना रहे तथा जवाँ बना रहे।

जब योगी पुरुष ने सपने लेने की बात कही, तो मन में सहज ही जिज्ञासा उभर आई कि क्या कभी आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने सपनों की दुनिया का सफर किया था? भीतर से जवाब मिला – शायद नहीं। मन ने प्रश्न किया – क्यों? फिर उत्तर आया – उनका अपने शिक्षा गुरु के प्रति इतना अधिक समर्पण था कि उन्हें कुछ नया करने, नया सोचने की आवश्यकता ही नहीं थी। दूसरी बात – सामान्यतः स्वप्न उसे ही आते हैं, जिसके भीतर कोई लालसा हो, कोई विचार, कल्पना हो, कोई रोग-शोक हो, कोई इच्छा या कामना हो। जिनके भीतर इच्छा, कामना, लालसा के वायरस न हों, उन्हें शायद स्वप्न न भी आते हों।

आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की जीवन-पोथी के अक्षर निर्विकल्प, अप्रमत्त थे। उनके पास स्वप्न आकर करता भी क्या? गुरुदेव के पास भय, शोक भी नहीं था। उनके पास तो केवल प्रज्ञा की और आत्म-मिलन की शर्त थी। आचार्य तुलसी के प्रति उनका जो समर्पण भाव था, जो मन का समर्पण था, यह तो कोई महान योद्धा ही कर सकता है। शिक्षा प्रदाता ने दिन को रात कहा, तो उन्होंने रात साबित कर दिखाया। आचार्य तुलसी ने समाज-सुधार के अनेक सपने लिए और आचार्य श्री महाप्रज्ञजी उनमें रंग उकेरते गए, रंग भरते गए, आचार्य तुलसी के सपनों को आकार देते गए।

तेरापंथ के आद्यप्रणेता आचार्य भिक्षु और आचार्य भारमलजी, इधर आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञजी की जोड़ी – जिसने भी देखी, शायद वह यह कहे बिना नहीं रह पाया होगा कि यह साक्षात वीर-गोयम की जोड़ी है, राम-लक्ष्मण की जोड़ी है, जहाँ शरीर दो थे पर आत्मा एक थी। भाग्योदय से ऐसे गुरु मिल जाएँ, तो फिर क्या अपेक्षा है शिष्य को अपनी चिंता करने की, कल्पना करने की?

प्रज्ञा के परम पुंज–आचार्य श्री महाप्रज्ञ

● साध्वी केवलयशा ●

वे दीप नहीं, दिशा थे।
वे मुनि नहीं, मौन की महिमा थे।
वे वाणी नहीं, वाणी के व्रती थे।
वे जीवन नहीं, जीवन से परे जीवन-संकेत थे।
पंद्रह वर्ष बीत गए।
पर ऐसा लगता है, जैसे उन्होंने
अभी-अभी प्रेक्षा ध्यान सिखाया है।
जैसे अभी-अभी अहिंसा यात्रा के चरण यथावत धूल में पड़े हैं।
जैसे अभी-अभी उन्होंने कहा है –
'क्रोध नहीं, करुणा रखो। विवाद नहीं, संवाद रखो।'

एक ऋषि, जो युग की भाषा बोलता था।
जहाँ धर्मगुरु केवल आशीर्वाद देते हैं, वहाँ उन्होंने
प्रश्न पूछना सिखाया।
जहाँ साधु केवल तप करते हैं, वहाँ उन्होंने विज्ञान
और अध्यात्म को एक सूत्र में बाँधा।

उन्होंने कहा–

'धर्म का आधार डर नहीं, दृष्टि होनी चाहिए।'
वे परंपरा के पथिक थे,
पर दृष्टिकोण में अद्भुत नव्य चिंतन था।

उन्होंने कहा –

'संघ को यदि जीवित रखना है,
तो संवाद को जीवंत रखना होगा।'

स्मृति की धूप में बसी छाया...
अब सोलहवें वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं।
क्या हम उन्हें केवल चित्रों में, मंचों पर, या पुस्तकों के पृष्ठों में सीमित कर देंगे?

नहीं।

महाप्रज्ञ को समझना है तो प्रेक्षा के मौन में उतरना होगा।
महाप्रज्ञ को जीना है तो अहिंसा को साँसों में भरना होगा।

उनकी मौनता, उनका संवाद थी।
जब वे चुप रहते थे, तो विचार गूँजते थे।
जब वे चलते थे, तो शब्द पीछे-पीछे चलते थे।
उनका एक वाक्य किसी युवा के लिए संकल्प,
किसी वृद्ध के लिए संबल,
किसी संशयी के लिए प्रकाश था।

आज के युग के लिए उनकी वाणी –
'दुनिया तकनीक से नहीं बचेगी, सहिष्णुता से बचेगी।
विकास का आधार बुद्धि नहीं, संवेदना होना चाहिए।
धर्म का मापदंड चमत्कार नहीं, चरित्र होना चाहिए।
श्रद्धांजलि नहीं, उत्तरदायित्व होना चाहिए।'

आज सोलहवाँ वर्ष है –
हम पुष्प अर्पित करें, पर केवल फूल नहीं,
अपने जीवन को ही पुष्प बनाएं।

सोलहवें वर्ष की इस पुण्य वेला में –
महाप्रज्ञ को न केवल श्रद्धा,
बल्कि अपने कर्मों से, स्मरण की नहीं,
समर्पण की भाषा दें।

आचार्य महाप्रज्ञ को श्रद्धांजलि केवल शब्दों से नहीं,
बल्कि विचारों के रूपांतरण से दी जा सकती है।

आज, जब उनके देवलोकगमन का
सोलहवाँ वर्ष स्मृति में आता है,
तो यह केवल किसी आचार्य या
युगप्रधान का स्मरण नहीं वे युगपुरुष थे।

उन्होंने संघ का संचालन किया,
लेकिन चेतना का संचालन भी किया।

उन्होंने मुनियों को संयम सिखाया,
पर जन-जन को जीवन जीने की कला दी।

जहाँ विचारधाराएँ संघर्ष में उलझती हैं,
उन्होंने अहिंसा यात्रा के माध्यम से संवाद का सेतु बनाया।

एक ऋषि, जिसकी वाणी से भविष्य बोला –
इस युग को धर्म नहीं,
धर्म का आचरण चाहिए।
यही उनका संदेश था।

श्रद्धांजलि नहीं – साझी जिम्मेदारी।

प्रश्न यह नहीं कि उन्होंने क्या दिया,
प्रश्न यह है कि हमने क्या अपनाया?

क्या हम संवेदना की संस्कृति को आगे बढ़ा पाए?
क्या हम विवाद से संवाद की ओर बढ़ पाए?

अगर नहीं, तो सच्ची श्रद्धांजलि
उनके विचारों की व्याख्या नहीं,
बल्कि उनके विचारों की जीवंत अभिव्यक्ति है।

एक युग, जो अब भी उनके साथ चल रहा है।
महाप्रज्ञ कभी गए नहीं –
जब तक हम प्रेक्षा कर सकते हैं,
जब तक हम अहिंसा सोच सकते हैं –
तब तक वे यहीं हैं, हमारे बीच।

अक्षय तृतीया पर विशेष आलेख

समाज-सृष्टा, नीति-निर्माता भगवान ऋषभ

● मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ●

भारतीय संस्कृति के प्राणतत्त्व रहे हैं— संयम, सद्भावना, नैतिकता और मानवता। ये गुण भारतीय जनमानस को विरासत में प्राप्त हैं। किंतु आज का इंसान भौतिक चेतना और पदार्थवादी दृष्टिकोण की ओर अग्रसर होता जा रहा है। उसका चिंतन आत्मकेंद्रित न होकर धन, यश, नाम और प्रसिद्धि की ओर एक लंबी दौड़ और ऊँची उड़ान भरने लगा है। उसका चिंतन अब 'येन केन प्रकारेण प्रसिद्ध पुरुषो भवेत' जैसा हो गया है। उसके विचारों में, चिंतन में, और क्रियाओं में पदार्थ की प्राप्ति ही लक्ष्य बनकर रह गई है।

जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं, तो उस आदि युग और आदिकर्ता भगवान ऋषभ का स्मरण होता है। आदिकर्ता भगवान ऋषभ का प्रभाव मानव इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। जैन, बौद्ध, वैदिक और यहाँ तक कि इस्लामी परंपरा में भी उनके प्रभाव के दर्शन होते हैं। यद्यपि भगवान ऋषभ का प्रभाव वर्तमान कालगणना की परिधि में नहीं आता, वे प्रागैतिहासिक महापुरुष रहे हैं।

उनकी जीवनगाथा गंगोत्री के प्रवाह की तरह निर्मल और पवित्र रही है, जो हजारों-लाखों वर्षों से जनजीवन को प्रेरणा प्रदान करती आ रही है। भगवान ऋषभ ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने भोगभूमि के मानव को कर्मभूमि और धर्मभूमि में जीने योग्य बनाया। भगवान ऋषभ धर्मतीर्थ के आद्य प्रणेता, समाज-सृष्टा एवं नीति-निर्माता थे, जिन्हें 'आदम बाबा' के रूप में भी जाना गया। राजा ऋषभ ने राज्य वैभव को त्यागकर परमात्मा-तत्व की प्राप्ति हेतु संन्यास का मार्ग अपनाया।

साधना के क्षेत्र में प्रवेश करते हुए उन्होंने घोषणा की— 'सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि' अर्थात् आज से सभी पापकारी प्रवृत्तियों का त्याग करता हूँ। दीक्षा अंगीकार करने के पश्चात वे परिवार, समाज और राष्ट्र के कर्तव्यों से ऊपर उठ गए। विश्वमैत्री की विराट भावना उनकी आधारशिला बन गई। अब वे मौन साधना में लीन हो गए। भगवान ऋषभ भिक्षा के लिए ग्रामों और नगरों में भ्रमण करते, पर भोली जनता साध्वाचार और भिक्षा विधि से पूर्णतः अनभिज्ञ थी। जनता भावविभोर होकर उन्हें रूपवती कन्या, बहुमूल्य वस्तुएँ, आभूषण, सिंहासन, हाथी, घोड़े आदि अर्पित करने का आग्रह करती, परंतु एक अकिंचन साधु के लिए इनका कोई मूल्य नहीं था। किंतु आहार दान की ओर कोई भी अग्रसर न होता। इस प्रकार लगभग एक वर्ष व्यतीत हो गया और भगवान के तप का क्रम चलता रहा।

एक दिन भगवान ऋषभ के संसारपक्षीय प्रपोत्र श्रेयांश ने रात्रि में एक स्वप्न देखा, जिसमें उसने अपने हाथों से मेरू पर्वत को अमृत से सिंचित करते हुए स्वयं को देखा। प्रातःकाल जब वह महल के गवाक्ष में बैठा उसी स्वप्न के बारे में सोच रहा था कि तभी उसने दूर से भगवान ऋषभ को आते हुए देखा। पूर्वजन्म की स्मृति जागृत हुई और वह महल से उतरकर भगवान ऋषभ के समक्ष उपस्थित हुआ। वंदन करके उन्हें भिक्षा देने का निवेदन किया। उस समय किसान भेंट स्वरूप इक्षु-रस से भरे घड़े लेकर आए थे। श्रेयांश ने अहोभाव से इक्षु रस अर्पित किया और भगवान ने कर-पात्र से पारणा किया। यह तिथि तृतीया की थी। गगनमंडल में दिव्य ध्वनि हुई— 'अहोदानं! अहोदानं!' देवताओं ने रत्नों की वर्षा की और तभी से यह दिन अक्षय तृतीया के रूप में मनाया जाने लगा। जैन परंपरा में इस दिन की स्मृति में अनेक श्रावक-श्राविकाएँ वर्षीतप का व्रत करते हैं, जिसमें वर्षभर एक दिन उपवास और अगले दिन पारणा किया जाता है। क्योंकि निरंतर एक वर्ष तक उपवास करना वर्तमान में कठिन है, अतः यह प्रतीकात्मक तप साधना है।

अन्य परंपराओं में अक्षय तृतीया को परशुराम जयंती के रूप में मनाया जाता है। इस दिन को अबूझ मुहूर्त माना गया है, जिसमें कोई भी शुभ कार्य बिना किसी विशेष गणना के संपन्न किया जा सकता है। आज का यह मंगल दिवस मानव जाति के लिए मंगलमय हो, और जीवन में अक्षय सुख, शांति और धर्म की ज्योति प्रदान करे।

बोलती किताब

भीतर की ओर

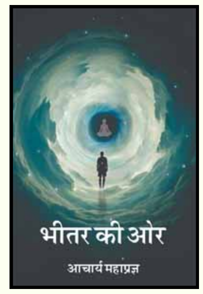

अध्यात्म की नई शताब्दी - इक्कीसवीं शताब्दी को अध्यात्म की शताब्दी कहा जा रहा है। लेकिन यह कैसे संभव होगा? भौतिक और तकनीकी विकास की इस तेज़ दौड़ में अध्यात्म की गति कैसी होगी? मनुष्य आज भी इन्द्रिय-चेतना के स्तर पर जी रहा है, जहां धन, पदार्थ और यंत्रों का आकर्षण अधिक है। जब तक इन्द्रियातीत चेतना का जागरण नहीं होगा, तब तक आध्यात्मिकता की ओर झुकाव कैसे बढ़ेगा? भीतर की ओर इन्हीं प्रश्नों के उत्तर खोजने का एक प्रयास है।

नई दिशा की खोज - मनुष्य ने अर्थ और पदार्थ की दिशा में बहुत प्रगति कर ली, लेकिन क्या इससे उसे वास्तविक संतुष्टि मिली? भौतिकता के प्रति आसक्ति ने उसे जकड़ लिया है, जिससे मुक्ति पाना आवश्यक है। असल में, समस्या पदार्थ को छोड़ने की नहीं, बल्कि आसक्ति से मुक्त होने की है। जीवन में संतुलन लाने के लिए आत्मानुभूति और चैतन्य की दिशा में कदम बढ़ाना होगा। यह पुस्तक हमें भौतिकता के जाल से निकलकर एक नए दृष्टिकोण की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

जीवन के प्रश्न और उनकी सार्थकता - क्या हम केवल सांस लेने और दिनचर्या निभाने के लिए जी रहे हैं? या जीवन का इससे कोई गहरा अर्थ है? जीने की सार्थकता केवल बाहरी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि आत्म-ज्ञान में है। जब तक हम अपने भीतर नहीं झांकते, तब तक जीवन का वास्तविक उद्देश्य अधूरा ही रहेगा। ध्यान और आत्म-मंथन से ही वह चेतना विकसित हो सकती है, जो हमें अपने अस्तित्व के मूल प्रश्नों का उत्तर दे सके।

ध्यान: आत्म-जागरण का माध्यम - ध्यान केवल मानसिक शांति का साधन नहीं, बल्कि आंतरिक विकास की कुंजी है। यह हमारी भावनाओं, आदतों और स्वभाव में सकारात्मक परिवर्तन लाता है। ध्यान से हमारी दृष्टि और जीवन का दृष्टिकोण बदलता है, जिससे आध्यात्मिक यात्रा सहज बन जाती है। लेकिन ध्यान का सही आकलन कैसे किया जाए? इस पुस्तक में ध्यान के वैज्ञानिक और आध्यात्मिक पहलुओं की गहन विवेचना की गई है, जिससे साधक अपने मार्ग को स्पष्ट कर सके और आत्म-जागरण की ओर बढ़ सके।

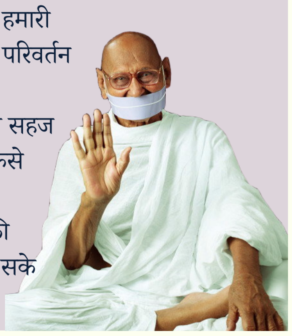

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

पृष्ठ 1 का शेष

प्राण जाए पर...

धर्म रूपी चेतना भिन्नता को सहन नहीं कर सकती। चाहे घर में हो या धर्मस्थान में, धर्म तो आत्मा में होना चाहिए। धर्म के प्रति हमारी अगाढ़ आस्था हो। दृढ़धर्मी श्रावक बनें। साधु भी धर्म को न छोड़ें, चाहे देह भी छूट जाए। धर्म कमाई ही एक ऐसा तत्व है जो आगे साथ जा सकता है। संवर-निर्जरा की कमाई ही आगे जा सकती है; धन आगे नहीं जाता।

वाव प्रवास के संदर्भ में कहते हुए गुरुदेव ने कहा कि पूर्व में छापर प्रवास के समय वाव में सात दिवस प्रवास का कहा था। आज वाव प्रवास का नवम और अंतिम दिवस है। वाव के अन्य समाज के लोगों ने भी प्रवचन आदि का लाभ लिया। यहां सबमें धर्म के प्रति मजबूती रहे। धर्म को कठिनाई में भी न छोड़े। बाहर जगह-जगह से वाव के लोग यहां आएं। हमारे श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं में धर्म के अच्छे संस्कार बने रहे। हमारा प्रवचन कार्यक्रम राणाजी के स्थान पर हो रहा है। राणा परिवार में भी खूब धार्मिकता बनी रहे। साध्वीवर्याजी ने कहा कि जीवन में आकृति का थोड़ा मूल्य है, पर स्वभाव का अधिक मूल्य होता है। हमारा स्वभाव गुणों से अच्छा बन सकता है। हम गुणग्राही बनें। स्वर्ण में अनेक विशेषताएँ होती हैं। उसके गुणों को हम जीवन में उतारें। सोने में कोमलता और सहनशीलता होती है। कोमलता से करुणा आती है, करुणा से अहिंसा की भावना जागती है। नम्रता, विनम्रता और मृदुता के गुण कोमलता से आ सकते हैं। व्यवस्था समिति संयोजक विनीतभाई संघवी, केश भाई मेहता, प्रवीणभाई, चंपक भाई मेहता, वीर परिख, शिल्पा मेहता, विरल संघवी, अर्हता मेहता, मीना बेन ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। संघ समर्पण गाथा के अंतर्गत सवाचंद भाई, मोती चंद डोशी, परषोत्तम भाई, शाखल चंद भाई डोशी परिवारों ने अपनी प्रस्तुति दी। वाव पथक भजन मंडली, महिला मंडल की बहनों ने गीतों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

जीवन जीने की कला....

धर्मगुरु का अपने शिष्यों के प्रति कर्तव्य है कि वह उन्हें अध्ययन कराए, तो शिष्य का भी कर्तव्य है कि वह गुरु की निःस्वार्थ भाव से सेवा करे। गुरु से ज्ञान लेना है तो सेवा भी देनी है। कर्तव्य उभयपक्षीय होता है। जनता का सरकार के प्रति और सरकार व अधिकारियों का जनता के प्रति कर्तव्य होता है। यदि दोनों पक्ष अपने-अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहें तो व्यवस्था सुचारु रूप से चल सकती है। धर्मगुरु यदि अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक रहे तो जनता को सन्मार्ग का दर्शन मिल सकता है। हर व्यक्ति का अपना-अपना कर्तव्य होता है। उसे उसके प्रति सजग रहना चाहिए। जिसका जो कर्तव्य है, उसका पूरा पालन होना चाहिए। कर्तव्य पालन में असजगता और प्रमाद न हो। आचार्यश्री भिक्षु ने संघ के लिए मर्यादा और अनुशासन का निर्माण कर कर्तव्य पालन किया, तभी आज तेरापंथ संघ का विकास संभव हो सका है। यदि लीडर में नेतृत्व क्षमता और फॉलोवर में अनुकरण क्षमता अच्छी हो तो विकास संभव है। कर्तव्य के प्रति जागरूकता और अकर्तव्य से परहेज से सभी का कल्याण हो सकता है।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में आचार्य श्री से पूर्व साध्वीवर्या संबुद्धयशा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमारा जीवन हमारे हाथ में है कि हम कैसा जीवन जीना चाहते हैं — स्वतंत्र या परतंत्र। जो व्यक्ति स्वतंत्र जीवन जीना चाहता है, उसे प्रतिक्रिया विरति की साधना करनी होगी। हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। प्रतिक्रिया सकारात्मक या नकारात्मक रूप में हो सकती है। हमें किसी के हाथ की कठपुतली नहीं बनना है। हमें रिएक्शन प्रूफ बनना है, तभी हम स्वतंत्र जीवन जी सकेंगे। इस अवसर पर कार्यक्रम में दिलीप भाई डोशी, राजपूत समाज से ईश्वर भाई चारडिया, पिंकेश भाई मेहता ने अपने विचार रखे। तुलसी सेवा दल के सदस्यों ने गीत का संगान किया। मावसरी-कुंभारखा परीख परिवार ने गीतिका की प्रस्तुति दी। वाव पथक सूरत ज्ञानशाला ने अभिवन्दना में प्रस्तुति दी। बालोतरा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों तथा प्रशिक्षिकाओं ने भी प्रस्तुति दी। बालोतरा के ज्ञानार्थियों ने संकल्प पुष्प पूज्यवर के श्रीचरणों में अर्पित किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

स्थूल से सूक्ष्म की यात्रा में श्रुतज्ञान होता है महत्वपूर्ण : आचार्यश्री महाश्रमण

वाव।
18 अप्रैल, 2025

आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की प्रतिकृति आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे पास औदारिक शरीर है। जैन वाङ्मय में पाँच प्रकार के शरीर बताए गए हैं — औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तेजस और कार्मण शरीर।

औदारिक शरीर- मनुष्य और तिर्यंच प्राणियों का होता है।

वैक्रिय शरीर- मुख्यतः देवताओं और नारकीय जीवों का होता है; मनुष्य और तिर्यंच गति में यह कहीं-कहीं स्वल्पकालीन रूप में पाया जा सकता है।

आहारक शरीर- किसी-किसी विशिष्ट साधक को प्राप्त होता है।

तेजस और कार्मण शरीर- सभी संसारी जीवों में होते हैं, जो एक जन्म से दूसरे जन्म तक साथ चलते हैं। जब तक मोक्ष प्राप्त न हो, ये दोनों शरीर जीव के साथ रहते हैं।

आचार्यश्री ने कहा कि हमारे पास यह स्थूल औदारिक शरीर है, जिसमें पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ — श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रसन और स्पर्श — होती हैं। इनके अतिरिक्त हाथ, पाँव आदि पाँच कर्मेन्द्रियाँ भी होती हैं।

यदि वक्ता अच्छा हो और श्रोता भी सजग हो, तो ज्ञान का आदान-प्रदान सफलतापूर्वक हो सकता है। एक ज्ञानी वक्ता यदि मन से बोले और हितोपदेश दे, तो वह स्वयं पर भी अनुग्रह करता है और श्रोताओं पर भी।

आचार्यश्री ने आगे कहा कि प्रवचनकर्ता यदि तैयारीपूर्वक बोले, तो उसका वचन प्रभावी होता है। उपासक श्रेणी के व्यक्तियों को पर्युषण आदि अवसरों पर प्रवचन करना पड़ता है; ऐसे में नव्यता और भव्यता का समावेश बना रहना चाहिए। श्रोता भी समीक्षात्मक बुद्धि से श्रवण करें, थोड़ी तर्क-जिज्ञासा रखें। एक अच्छा श्रोता वक्ता को भी सचेत कर सकता है।

श्रवण के अनेक लाभ हैं — सामायिक करते समय प्रवचन श्रवण से सावद्य कार्यों से बचा जा सकता है; नई जानकारियाँ प्राप्त होती हैं और पुरानी जानकारियाँ पुष्ट होती हैं। समस्या के समाधान भी मिल सकते हैं। श्रवण से सामग्री एकत्रित कर कोई श्रोता भी भविष्य में अच्छा वक्ता बन सकता है। वक्ता और श्रोता एक सुन्दर जोड़ी होते हैं। सुनते समय जागरूकता होनी चाहिए। अच्छी बातें ध्यान से ग्रहण करें और जीवन में उतारने का प्रयास करें।

औदारिक शरीर- मनुष्य और तिर्यंच प्राणियों का होता है।
वैक्रिय शरीर- मुख्यतः देवताओं और नारकीय जीवों का होता है; मनुष्य और तिर्यंच गति में यह कहीं-कहीं स्वल्पकालीन रुप में पाया जा सकता है।
आहारक शरीर- किसी-किसी विशिष्ट साधक को प्राप्त होता है।
तेजस और कार्मण शरीर- सभी संसारी जीवों में होते हैं, जो एक जन्म से दूसरे जन्म तक साथ चलते हैं। जब तक मोक्ष प्राप्त न हो, ये दोनों शरीर जीव के साथ रहते हैं।

श्रवण से मनुष्य पाप और पुण्य दोनों के स्वरूप को जान सकता है। जानने के बाद श्रेयस्कर मार्ग का चयन कर उसके अनुसार आचरण करना चाहिए। हमें कानों के माध्यम से अच्छी बातें सुनकर, उन्हें जीवन में अपनाकर कल्याण का साधन बनाना चाहिए।

पूज्य प्रवर के सान्निध्य में 'डिकरी वाव तेरापंथ नी' सम्मेलन का भी आयोजन हुआ। आशीर्वचन फरमाते हुए पूज्यवर ने कहा कि जिस परिवार में भी रहना हो, धर्म सदा हमारे साथ रहना चाहिए। अर्हन्नक श्रावक की भांति विषम, कठिन परिस्थिति में भी धर्म के प्रति दृढ़ता के भाव भीतर में रहे। बेटियों का पीहर से भी संबंध और ससुराल में भी संबद्ध होता है। कहा गया कि बेटी पीहर में भी उजाला कर सकती है और ससुराल में भी धर्म का प्रकाश कर सकती है। सभी में धर्म के प्रति निष्ठा बनी रहे, त्याग, संयम की साधना रहे और परिवार भी संस्कार युक्त हो ऐसा प्रयास रहना चाहिए। इस अवसर पर दीपिका लालन ने अपने विचार रखे। बहनों ने मंगलाचरण का संगान किया। विभिन्न बहनों ने मिलकर काव्य, भाषण आदि की प्रस्तुति दी।

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने अपने संबोधन में कहा कि हमें अपने जीवन की मूल्यता को बनाए रखना चाहिए। जीवन की मूल्यता बढ़ाने में 'समय' की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका है। हमें समय का सम्मान करना सीखना चाहिए। काल के प्रदेश नहीं होते, इसलिए समय को पकड़ा नहीं जा सकता। समय निरंतर गतिशील है — उसके पाँवों में पंख लगे हैं। हमें समय का भरपूर सदुपयोग करना चाहिए।

पूज्यवर की अभिवंदना में साध्वी अक्षयप्रभाजी, साध्वी धन्यप्रभाजी और समणी निर्मलप्रज्ञाजी ने अपनी जन्मभूमि में अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। डुंगरसी मेहता परिवार ने भी भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

मानव जीवन का सर्वोत्तम उद्देश्य है पूर्व कर्मों का क्षय : आचार्यश्री महाश्रमण

वाव।
16 अप्रैल , 2025

महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फ़रमाया कि हमें यह चिंतन करना चाहिए कि हम अपना जीवन निःउद्देश्य जी रहे हैं या सोद्देश्य। इतने मूल्यवान जीवन का यदि कोई श्रेष्ठ लक्ष्य बनाया जाए तो वह होना चाहिए आध्यात्मिक उन्नति।

शास्त्रों में बताया गया है कि मानव जीवन का सर्वोत्तम उद्देश्य पूर्व कर्मों का क्षय करना है। कर्मों के क्षय से मोक्ष की प्राप्ति संभव है।

मनुष्य जीवन ही एकमात्र ऐसा जीवन है जिसमें अध्यात्म साधना की उत्कृष्टता संभव है। अन्य योनियों में ऐसी साधना दुर्लभ है। मनुष्य ही ज्ञान को प्राप्त कर चौदह गुणस्थानों की यात्रा कर सकता है, जो अन्य योनियों में संभव नहीं है। जब लक्ष्य उच्चतम होगा तो छोटे-छोटे विषयों में उलझने की आवश्यकता नहीं रहेगी। मोक्ष प्राप्ति के लिए जीवन शैली धार्मिक और आध्यात्मिक होनी चाहिए — जिसमें अहिंसा, संयम और तप प्रमुख हों। शरीर का संरक्षण भी आवश्यक है, क्योंकि शरीर साधना का उपकरण है। अतः उसे उचित आहार, जल और वायु की पूर्ति देकर साथ चलाना चाहिए।

आचार्यश्री ने समझाया — ₹भूख रूपी कुतिया को टुकड़े दो तो वह शांत रहती है। वैसे ही संयमित आहार लो। ऊनोदरी (थोड़ा कम भोजन करना) का विशेष महत्व है। चौविहार साधना, 14 नियमों का पालन, शुद्ध आहार — ये सब साधना में सफलता के साधन हैं। खानपान में भी संयम रखें, जैसे जमीकंद आदि के परहेज से संयम और भी मजबूत हो सकता है।₹

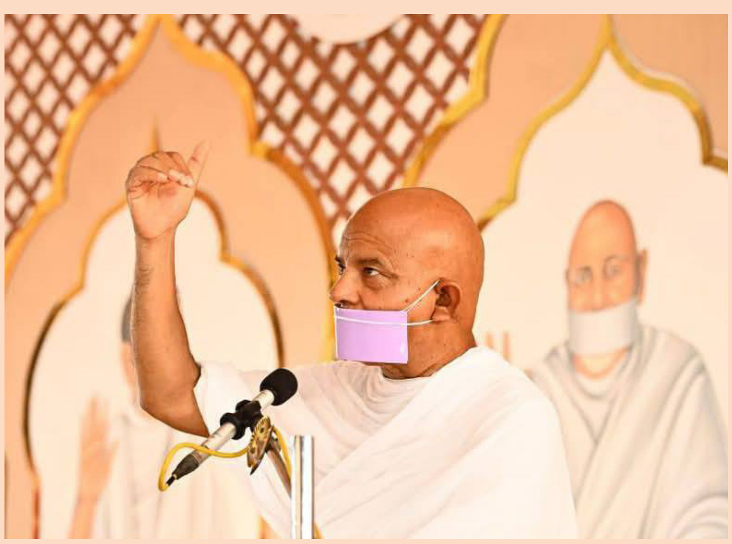

साध्वीवर्याश्री संबुद्धयशाजी ने अपने विचार रखते हुए कहा - जो व्यक्ति कठिन तप में भी अपने स्वभाव को स्थिर रखता है, वही सच्चा हीरा बन सकता है। जीवन में अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती रहती हैं। समभाव से जीने वाला व्यक्ति ही सच्ची सफलता प्राप्त कर सकता है। हमारा मन मूढ़ अवस्था में बार-बार बदलता रहता है, इसलिए समता साधना का अभ्यास अनिवार्य है।

पूज्यवर के स्वागत में मुमुक्षु कल्प, श्रीकेशभाई मेहता, किशोर मंडल व कन्या मंडल ने अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। विशाल परीख ने अपने परिवार के साथ आचार्यश्री से मंगलपाठ का श्रवण कर संस्था में प्रवेश किया। परीख परिवार की ओर से समकित परीख ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। वाव संघ के प्रमुख भीखाभाई, पूर्व सरपंच व राजपूत समाज की ओर से हरीसिंह भाई, श्री जैन श्वेताम्बर वाव-पथक तेरापंथ सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष राजेश मेहता, चंपकभाई मेहता ने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति दी। शिवांगी सुरेश मेहता ने गीत का संगान किया। ऊमजी मेहता परिवार ने संघ समर्पण गाथा प्रस्तुत की। पूज्यवर ने ऊमजी मेहता परिवार को आशीर्वचन देते हुए स्मरण किया कि गुरुदेव तुलसी ने गीत में इस परिवार का विशेष उल्लेख किया था। मुंबई से समागत राजेश शर्मा ने भी अपने भावों को अभिव्यक्त किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 अप्रैल - 04 मई, 2025

प्रशस्त चिन्तन या अचिन्तन की दिशा में बढ़ें आगे : आचार्यश्री महाश्रमण

वाव।
17 अप्रैल, 2025

भैक्षव शासन सरताज, आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि व्यक्ति के भीतर संकल्प-विकल्प निरंतर उठते रहते हैं, जैसे जल में तरंगें उठती हैं। उसी प्रकार, हमारे मन रूपी जल में विचारों की तरंगें उत्पन्न होती हैं, और मन तरंगित हो जाता है।

प्रश्न यह है कि आत्मा का साक्षात्कार कौन कर सकता है? वही व्यक्ति आत्म तत्व को देख सकता है, जिसके मन रूपी जल में राग-द्वेष आदि की तरंगें नहीं उठतीं। जिसके मन में समत्व का भाव है, वही आत्मा का दर्शन कर सकता है। अन्य कोई व्यक्ति आत्मा को नहीं देख पाता। राग-द्वेष से मन में गुस्सा, अहंकार, छल-कपट आदि भाव उत्पन्न हो जाते हैं। किसी के प्रति द्वेष, तो किसी के प्रति राग के भाव जाग सकते हैं। किंतु जो व्यक्ति समतावान बन जाता है, उसके संकल्प-विकल्प शांत हो जाते हैं।

आचार्यश्री ने समझाया कि श्वान वृत्ति और सिंह वृत्ति में फर्क होता है। श्वान वृत्ति ऊपर-ऊपर देखने की वृत्ति है, जबकि सिंह वृत्ति मूल कारण तक जाने की वृत्ति है। हमें भी समस्याओं के मूल कारण पर ध्यान देना चाहिए। समता में स्थित व्यक्ति के संकल्प-विकल्प नष्ट हो जाते हैं। जीवन में कार्य करते हुए भी मन में विचार उठते ही रहते हैं। प्रेक्षा ध्यान की साधना मन की चंचलता को शांत करने का अद्भुत साधन है।

हम सोचते हैं, और सोचने में तीन स्थितियाँ हो सकती हैं:

1. अशुभ चिन्तन (दुर्विचार)
2. शुभ चिन्तन (सुविचार)
3. अचिन्तन (निर्विचारता)

हम मन को अशुभ से शुभ की ओर ले जाएँ; निर्विचारता तो साधना की पराकाष्ठा है। चिन्तन के द्वारा हम दुःखी भी हो सकते हैं और सुखी भी। दिशा बदली, दशा बदल गई। वास्तविक चिन्तन पर ध्यान दें। अनुकूलताओं को देखें, प्रतिकूलताओं में उलझने की आवश्यकता नहीं। जो व्यक्ति विषयों में संकल्प नहीं करता, उसकी तृष्णाएँ भी क्षीण हो जाती हैं।

आचार्यश्री ने कहा — 'हम मानसिक शांति पाने के लिए अपना चिन्तन सकारात्मक रखें। दृष्टिकोण को सम्यक् रखें। अग्र और मूल का विवेक करें, कारण और कार्य को समझें। कारण पता हो तो समस्या का समाधान सहज मिल जाता है। हम प्रशस्त चिन्तन या अचिन्तन की दिशा में बढ़ें।'

साध्वीवर्याजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि परिवर्तन शाश्वत है। परिवर्तन दो प्रकार के होते हैं — एक नैसर्गिक और दूसरा पुरुषार्थ से प्रेरित। जीव और पदार्थ की पर्यायें निरंतर बदलती रहती हैं। स्वभाव को बदला नहीं जा सकता, किंतु आध्यात्मिक साधना के द्वारा स्वभाव को सुंदर बनाया जा सकता है। भीतर दृढ़ संकल्प होना चाहिए। हम अपनी कमियों को मिटाकर स्वयं को निखारें। मोहनीय कर्म पर प्रहार कर अपना स्वभाव उज्ज्वल बनाएं।

पूज्यवर की अभिवंदना में मुनि अक्षयप्रकाशजी और मुनि निकुंजकुमारजी ने भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी। मेहता शाम जी भाई छगन जी भाई परिवार ने गीत की प्रस्तुति दी। रेशमा मेहता ने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।